इकाई 5 क्षेत्रीयता, वैयक्तिक स्थान और समुदाय रचना*

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 क्षेत्रीयता सप्रंत्यय और परिभाषा

5.2 क्षेत्रीयता का वर्गीकरण

- 5.2.1 अल्टमैन प्रणाली
- 5.2.2 लैमेन और स्कॉट प्रणाली
- 5.2.3 अतिलंघन के प्रकार

5.3 क्षेत्रीयता का मापन

- 5.3.1 क्षेत्र अध्ययन एवं क्षेत्र प्रयोग
- 5.3.2 सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार
- 5.3.3 प्राकृतिक पर्यवेक्षण और अप्रत्यक्ष उपाय

5.4 क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले कारक

- 5.4.1 वैयक्तिक कारक
- 5.4.2 सामाजिक कारक
- 5.4.3 भौतिक कारक
- 5.4.4 सांस्कृतिक और नृजातीय कारक

5.5 क्षेत्रीयता के सिद्धांत

- 5.5.1 जीन और क्रमिक विकास की भूमिका
- 5.5.2 एक अन्तःक्रिया आयोजक
- 5.5.3 व्यवहार निर्धारण सिद्धांत

5.6 समुदाय रचना की अवधारणा

5.7 क्षेत्रीयता और समुदाय रचना

- 5.7.1 पड़ोस
- 5.7.2 अस्पताल

5.8 क्षेत्रीय व्यवहार के शोध साक्ष्य

- 5.8.1 क्षेत्रीय सीमांकन, वैयक्तिकरण और व्यवहार
- 5.8.2 क्षेत्रीयता, व्यवहार और आक्रमकता
- 5.8.3 वास्तुकला विशेषताएँ और क्षेत्रीय व्यवहार

5.9 वैयक्तिक स्थान

- 5.9.1 वैयक्तिक स्थान का संप्रत्यय
- 5.9.2 गोपनीयता
- 5.9.3 वैयक्तिक स्थान के निर्धारक
- 5.9.4 वैयक्तिक स्थान अध्ययन की विधियां

*शुवब्रत पोद्दार, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, काजी नज़रूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल

5.10 सारांश

5.11 मुख्य शब्द

5.12 समीक्षा प्रश्न

5.13 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

5.14 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

अधिगम के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद, आपः

- क्षेत्रीयता को परिभाषित कर पाएंगे और क्षेत्रीयता के अर्थ की व्याख्या कर पाएंगे;
- विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीयता की विवेचना कर पाएंगे;
- क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले वैयक्तिक, सामाजिक भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों की व्याख्या कर पाएंगे;
- क्षेत्रीयता के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य की समालोचनात्मक व्याख्या कर पाएंगे;
- क्षेत्रीयता के मापन में प्रयुक्त विभिन्न विधियों का वर्णन कर पाएंगे;
- समुदाय के अभिकल्प की व्याख्या कर पाएंगे;
- वैयक्तिक स्थान से संबंधित संप्रत्यय, प्रकार और कारकों की व्याख्या कर पाएंगे;
- गोपनीयता को परिभाषित कर इसका वर्गीकरण कर पाएंगे; और
- वैयक्तिक अन्तरालन मापन विधियों की पहचान कर पाएंगे।

5.0 प्रस्तावना

क्षेत्रीयता पशु व्यवहार की एक सामान्य अवधारणा है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर पशु अपना दावा करता है और अपनी प्रजातियों से इसकी रक्षा करता है अतः इस प्रकार अपनी प्रजातियों के प्रसार को सुनिश्चित करके घनत्व को नियंत्रित करता है (हॉल, 1969)। अतः इस इकाई में हम क्षेत्रीयता और सामुदायिक अभिकल्प के विषय में चर्चा करेंगे। क्षेत्रीयता के वर्गीकरण का अनुपालन करते हुए हम क्षेत्रीयता की अवधारणा एवं परिभाषा के साथ शुभारंभ करते हैं। इसमें हम अल्टमैन प्रणाली, लेमैन स्कॉट प्रणाली इत्यादि को देखेंगे। इसके बाद क्षेत्रीयता में उल्लंघन के प्रकार और संबंधित क्षेत्र की रक्षा के लिए किए जाने वाले विभिन्न बचावों का उल्लेख किया जायेगा। यह इकाई क्षेत्रीयता के मापन के मुद्दे को उजागर करती है और क्षेत्र अध्ययन और क्षेत्र प्रयोगों सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों और प्राकृतिक पर्यवेक्षण और मापन में इसे किस प्रकार प्रयुक्त कर सकते हैं उसकी विवेचना की गई हैं। क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों पर चर्चा की गई है। क्षेत्रीयता के सिद्धांतों पर चर्चा की गई है और जीन एवं उद्विकास की भूमिका को

दर्शाया गया है। अन्त में समुदाय अभिकल्प की व्याख्या और विवेचना को क्षेत्रीयता, पड़ोस तथा अस्पतालों के आलोक में।

5.1 क्षेत्रीयता संप्रत्यय और परिभाषा

क्षेत्रीयता एक अत्यंत व्यापकता के साथ-साथ एक सार्वभौमिक परि-घटना है। मानव क्षेत्रीयता के संकेतकों को हर जगह देखा जा सकता हैः स्थान बचाने हेतु पुस्तकालय की मेज पर बिखरी हुई किताबें, नाम की तख्ती, बाड़, ताले, अवरोधक इत्यादि। इसकी व्यापकता के बावजूद, क्षेत्रीयता का उनकी गहनता से अध्ययन नहीं किया गया हैं जिसके यह योग्य है। जुलियन एडनी (1974) की टिप्पणी है कि क्षेत्रीयता में भौतिक अंतरालन, स्वामित्व, आत्मरक्षा, उपयोग की अन्योन्यता, चिह्नक अस्मिता वैयक्तिकता, प्रभुत्व, संघर्ष, सुरक्षा, दावा, उत्तेजन एवं सतर्कता आदि अन्तर्गत हैं। क्षेत्रीयता को एक व्यक्ति या समूह द्वारा आयोजित व्यवहार और दृष्टिकोण के एक पैटर्न के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक निश्चित भौतिक स्थान, वस्तु या विचार के कथित, प्रयास या वास्तविक नियंत्रण पर आधारित है जिसमें स्वाभाविक व्यवसाय रक्षा, वैयक्तीकरण और इन्हें चिन्हित किया जाना शामिल हो सकता है। चिह्नांकन से किसी वस्तु या पदार्थ को व्यक्ति की क्षेत्रीय भावना को निर्दिष्ट करने के निमित्र किसी स्थान पर रखना अभिप्रेत है। उदाहरण के लिए कैफेटेरिया या मेज या कुर्सी पर किताबों का छोड़ना। वैयक्तीकरण का तात्पर्य इस तरह से चिह्नांकन है जिससे व्यक्ति की पहचान का निरूपण हो। उदाहरण के लिए कर्मचारी अपने कार्य स्थलों को चित्रों एवं स्मृति चिन्हों से सजाते हैं।

5.2 क्षेत्रीयता का वर्गीकरण

क्षेत्रीयता का वर्गीकरण कई प्रणालियों के संदर्भ में किया गया है जो नीचे विस्तृत रूप में दिए गए हैं।

5.2.1 आल्टमैन प्रणाली

इरविन आल्टमैन (1975) ने क्षेत्रों को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया है, आल्टमैन के वर्गीकरण में प्रत्येक प्रकार द्वारा अनुमत गोपनीयता, संबंद्धता या अभिगम्यता की सीमा का उल्लेख है।

प्राथमिक क्षेत्र – ये व्यक्तियों या प्राथमिक समूहों के स्वामित्व वाले स्थान होते हैं जो उनके द्वारा अपेक्षाकृत स्थायी आधार पर नियंत्रित होते हैं, और उनके दैनिक जीवन के लिए केंद्र होते हैं। किसी का शयन कक्ष या पारिवारिक आवास इसके उदाहरण में सम्मिलित है। स्वयं रहने वालों के लिए प्राथमिक क्षेत्र का मनोवैज्ञानिक महत्व हमेशा अधिक होता है।

द्वितीयक क्षेत्र – ये प्राथमिक क्षेत्रों की तुलना में कम महत्व रखते हैं, लेकिन ये स्वयं के रहने वालों के लिए मध्यम महत्व रखते हैं। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के कार्य पर एक मेज, पसन्दीदा रेस्तरां, जिम ने लॉकर, आदि। इन क्षेत्रों

पर नियंत्रण वर्तमान रहने वाले के लिए कम आवश्यक है और अजनबियों के साथ बदलने, अदला-बदली या साझा किये जाने की संभावना अधिक है।

सार्वजनिक क्षेत्र – ये वे क्षेत्र होते हैं जो समुदाय के साथ उत्तम स्थिति में किसी के लिए भी उपलब्ध होते हैं। समुद्र तट, फुटपाथ, होटल, लॉबी, रेल, स्टोर आदि सार्वजनिक क्षेत्र हैं। कभी-कभी भेदभाव या अस्वीकार्य व्यवहार के कारण सार्वजनिक क्षेत्र कुछ व्यक्तियों के लिए बंद कर दिये जाते हैं। प्राथमिक क्षेत्रों के विपरीत जहां आमतौर पर बाहरी लोगों के प्रवेश की अनुमति नहीं होती हैं, सार्वजनिक क्षेत्र उन भी बाहरी लोगों के लिए खुले होते हैं जिन्हें विशेष रूप से निष्कासित नहीं किया गया है।

अल्टमैन दो अन्य प्रकार के प्रदेशों का वर्णन करते हैं, यद्यपि वे सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त क्षेत्र नहीं हैं:

वस्तुएं – ये क्षेत्रों के लिए कुछ मानदंडों को पूरा करती हैं – हम अपनी पुस्तकों, कोटा साइकिल और कैलकुलेटर आदि को वैयक्तीकृत कर इनकी रक्षा करने के साथ-साथ इन पर अपना नियंत्रण भी रखते हैं।

विचार – ये भी कुछ तरीके से क्षेत्र हैं – इसलिए विकार और पेटेंट के माध्यम से उनका बचाव करते हैं। हमारे पास साहित्यिक चोरी के विरूद्ध नियम है। सॉफ्टवेयर लेखक अपने प्रोग्राम के स्वामित्व की रक्षा करने का प्रयास करते हैं।

5.2.2 लेमैन एवं स्कॉट प्रणाली

लेमैन एवं स्कॉट (1976) ने क्षेत्रों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है –

1) ***अन्तःक्रियात्मक क्षेत्र*** – ये क्षेत्र अन्योन्य संवाद स्थापित करने वाले व्यक्तियों के समूह द्वारा नियंत्रित होते हैं। उदाहरण तौर पर कक्षा, पारिवारिक पिकनिक क्षेत्र आदि। इन क्षेत्रों का थोड़ा स्पष्ट चिन्हनांकन किया जा सकता है, फिर भी इनमें प्रविष्टि को हस्तक्षेप, अशिष्टता या अनाधिकार प्रवेश माना जाता है।

2) ***दैहिक क्षेत्र*** – यह वैयक्तिक स्थान के समान नहीं है क्योंकि किसी की त्वचा की एक सीमा होती है न कि उससे कुछ दूर शरीरों को अनुमति के साथ प्रवेश दिया जा सकता है (जैसे, शल्यचिकित्सा में) या बिना अनुमति (जैसे, एक चाकू से हमला)। लेकिन व्यक्ति चिन्ह और अपनी शारीरिक रचना को वैयक्तिक रूप से बनाकर रखते हैं।

3) ***सार्वजनिक क्षेत्र*** – यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां कोई भी व्यक्ति जा सकता है किन्तु उसे विद्यमान मानदंडों का पालन करना होगा। इसको लेकर स्वामित्व भाव कम होता है, इसका नियंत्रण अत्यंत कठिन होता है और निवासी केवल इसे देख सकते है लेकिन इसको स्वामित्व नहीं धारण कर सकते हैं और कोई भी व्यक्ति या समूह अनन्य रूप से व स्वामित्व या नियंत्रण का दावा नहीं कर सकता है।

4) ***गृह क्षेत्र*** – यह वह क्षेत्र है जहाँ नियमित प्रतिभागियों को व्यवहार के सापेक्ष स्वतंत्रता मिली होती है और उनके क्षेत्र के प्रति घनिष्ठता और इस पर नियंत्रण का भाव रहता है।

हुसैन एल – शरकावी (1979) एवं लैंगर (1987) चार प्रकार की क्षेत्रीयता का उल्लेख किया है जो पर्यावरणीय अभिकल्प में उपयोगी है, अर्थात्:

1) ***संलग्न क्षेत्र*** – एक वैयक्तिक स्थान जिसका स्वामित्व किसी व्यक्ति के पास होता है।

2) ***मध्य क्षेत्र*** – स्वामित्व प्राप्त मकान या भवन।

3) ***सहयोगी क्षेत्र*** – ये अर्ध निजी एवं अर्थ सार्वजनिक होते है जैसे – गलियारे, स्विमिंग पूल, आमने-सामने के बगीचे आदि।

4) ***परिधीय क्षेत्र*** – यह एक सार्वजनिक स्थान है जैसे साझा खेल का मैदान और एक शहरी पार्क आदि।

ब्रोअर (1976) क्षेत्रों या प्रदेशों को चार प्रकार में वर्गीकृत किया है:

1) ***वैयक्तिक क्षेत्र*** – वैयक्तिक क्षेत्र, वैयक्तिक रूप से या समूहों में नियंत्रण से होता है। समूह के सदस्य, वे होते है जिनके बीच घनिष्ट संबंध होता है जैसे वैवाहिक संबंध या रक्त बंधन के कारण संबंध।

2) ***सामुदायिक क्षेत्र*** – सामुदायिक क्षेत्र उन समूहों द्वारा नियंत्रित होते है जिनके सदस्य बदलते रहते हैं लेकिन प्रत्येक सदस्य एक स्क्रीनिंग प्रक्रिया से गुजरता है और कभी-कभी सदस्य के लिए उद्घाटन समारोह भी आयोजित किया जाता है। यह समूह के सदस्यों एवं समूह के बाहरी सदस्यों के बीच अन्तर को स्पष्ट इसे किया जाता है।

3) ***संस्थागत क्षेत्र*** – यह क्षेत्र आम जनता द्वारा निधारित होता है और जनता के लिए खुला होता है जिसमें सार्वजनिक जगह जैसे राजमार्ग, एवं ऐसौ जगह भी शामिल है जो सार्वजनिक संपत्ति नहीं है जैसे प्रतीक्षालय, सिनेमा हॉल, आदि। उपरोक्त प्रकार के स्वामित्व की तुलना में निषेध और नियंत्रण कम मुक्त है। ये उन नियमों और मानदंडों के माध्यम से संचालित होते हैं जिन्हें एक समुदाय बनाता है ये नियम या जेंडर भिन्नता, उम्र में अन्तर या नस्लीय अन्तर पर आधारित हो सकते हैं।

4) ***मुक्त क्षेत्र*** – यह वह क्षेत्र है जहाँ कोई स्थायी निवासी नहीं होता है और किसी का अस्तित्व निश्चित समूह द्वारा न तो निषेधात्मक होता है और न ही निशिचित। व्यवहार का मार्गदर्शन करने वाले नियम स्वःनिर्धारित या प्राकृतिक शक्तियों पर आधारित या नैतिक मानदंडों के कारण होते हैं। ये क्षेत्र क्षेत्रीय या प्रादेशिक संकेतों की अनुपस्थिति की विशेषता है और इसलिए जो प्रतिबंध या

नियंत्रण उत्पन्न होते है, वे इसके निवासियों के खोज एवं कल्पना के कारण अधिक होते हैं।

5.2.3 अतिलंघन के प्रकार

शोध एवं अनुभव यह प्रदर्शित करते है कि ऐसे कई प्रकार हैं जिनसे किसी क्षेत्र या प्रदेश का उल्लंघन हो सकता हैः

लंघन या हमला – आमतौर पर मालिकाना हक लेने के इरादे से एक बाहरी व्यक्ति का शारीरिक रूप से प्रवेश करना। आधरण के लिए पति या पत्नी का परिवार के नये कम्प्यूटर को स्थापित करने के लिए सिलाई करने वाली जगह को ले लेना।

हिंसा – यह किसी के क्षेत्र में अधिक अस्थाई घुसपैठ या कब्जा है। आमतौर पर इसका लक्ष्य स्वामित्व नहीं बल्कि झंझलाहट या हमले, पूर्ण सेंधमारी इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

संदूषण – उल्लंघनकर्ता क्षेत्र में कुछ डरावना या दूषित पदार्थ या कोई वस्तु रखकर किसी और के क्षेत्र में अशुद्धता फैलाता है। उदाहरण के लिए एक बड़ी कम्पनी जो विषैला कचरा कहीं पर छोड़ रासायनिक देती हैं।

बचाव के प्रकार : जिस प्रकार से क्षेत्रों या प्रदेशों के उल्लंघन करने के कई प्रकार है उसी भांति उनका बचाव करने के भी कई प्रकार हैं। हालांकि यह याद रखना चाहिए कि क्षेत्रों का हमेशा उल्लंघन ही नहीं किया जा सकता है और जब उनका उल्लंघन किया जाता है, तब भी उनका सदैव बचाव नहीं किया जाता है।

मार्क कन्नप (1978) ने बचाव को तीन सामान्य प्रकारों में विभाजित किया हैः

रोकथाम बचाव – चिन्हक जैसे कोट, तौलिये, चिन्ह एवं बाड़ लगाना सभी रोकथाम बचाव है। जब व्यक्ति उल्लंघन की आशंका करता है और उसके घटित होने से पहले उसे रोकने के लिए कार्य करता है।

प्रतिक्रिया बचाव – यह आमतौर पर उल्लंघन हो जाने के बाद प्रतिक्रियाएं है। उदाहरण के लिए दरवाजा पटकने और उल्लंघन करने वाले पर शारीरिक रूप से हमला करना आदि।

सामाजिक सीमा बचाव – सामाजिक सीमा बचाव मेजबानों एवं आंगतुकों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रथा है। उदाहरण के लिए अफ्रीका में बुशमेन समूह के लोग बाहरी लोगों से क्षेत्रों की सीमा पर मिलते है एवं कुछ अभिवादन का आदान प्रदान करते हैं, तत्पश्चात बाहरी लोगों को अपने क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति देते हैं।

सामाजिक सीमा बचाव सामाजिक संपर्क के माध्यम से वांछित आगंतुकों से अवांछित आगंतुकों को पृथक करने का काम करती है।

अपनी प्रगति की जांच करें 1

1) क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता को उसके वर्गीकरण की विभिन्न प्रणालियों के साथ परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्षेत्रीयता के संबंध में विभिन्न प्रकार के उल्लंघन और क्षेत्रीयता के बचाव की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 क्षेत्रीयता का मापन

क्षेत्रीयता को कुछ निश्चित तकनीकों के माध्यम से मापा गया है जो निम्नलिखित हैं।

5.3.1 क्षेत्र अध्ययन एवं क्षेत्र प्रयोग

क्षेत्र प्रयोग वास्तविक परिस्थितियों में प्रायोगिक नियंत्रण एवं विषयों को यादृच्छिक रूप से शामिल कर प्रयोग करने का एक प्रयास है। क्षेत्र प्रयोगों की रचना करने और निष्पादित करने के लिए अनुपयोगी सृजनात्मकता एवं दृढ़ता की आवश्यकता होती है। साइमन वारले एवं कैलाब्रेस (2018) द्वारा किया गया एक अध्ययन क्षेत्रीयता तथा निर्णय लेने का एक दुर्लभ उदारहण है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि क्या किसी व्यक्ति के अपने क्षेत्र में होने से आपसी निर्णय के परिणाम पर एक आगन्तुक की अपेक्षा अधिक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त अनुसंधानकर्ता यह जानना चाहते थे कि क्या प्रभुत्व (व्यक्ति विशेष के रूप में) ने प्रक्रिया को प्रभावित किया है। उन्होंने तीन छात्रों के समूहों को एक कक्ष में मिलने के लिए वहां जिसमें एक छात्र निवासी था एवं अन्य दो आगन्तुक थे। समूह को बजट समस्या पर चर्चा करने और आम सहमति तक पहुंचने के लिए कहा गया।

प्रभुत्व ने निर्णय प्रक्रिया को अधिक प्रभावित नहीं किया। इसकी अपेक्षा, अन्तिम सर्वसम्पति ने बहस में क्षेत्र के मालिक के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित किया जितना कि यह आगन्तुकों के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करता है। अर्थात आगन्तुकों की अपेक्षा क्षेत्र का मालिक महत्वपूर्ण होता है। परिणाम जानकारी देते हैं कि यदि आप चाहते हैं कि निर्णय आपके अनुसार हो तो आपको, अपने स्थान पर निर्णय पर चर्चा करने हेतु दूसरों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा मालूम होता है कि यह रणनीति काम करती है कि आपके पास एक प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं या नहीं।

क्षेत्र अध्ययन वास्तविक परिस्थितियों में भी किया जाता है, स्वाभाविक रूप से होने वाले सहसंबंधों या चरों के मध्य अन्तर पर ध्यान केन्द्रित करता है, क्योंकि शोधकर्ता यादृच्छिक रूप से विषयों या प्रयोज्यों को नहीं चुन सकता है या चर पर नियंत्रण अभ्यास नहीं कर सकता है। एक विशेष क्षेत्र अध्ययन में, कई चरों को मापा जाता है लेकिन शोधकर्ता द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, तथा प्रयोगात्मक स्थितियों या परिस्थितियों के लिए कोई यादृच्छिक प्रक्रिया नहीं होती है। उदाहरण के लिए जैसन, रिचलर और ऊकर (1981) ने समुद्र तटों पर क्षेत्रीयता की परख की है। धूप सेंकने वाले रेडियो, तौलिये और छतरियों का उपयोग करके क्षेत्रों को चिन्हित करते है। परिणामों ने दर्शाया कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में छोटे क्षेत्रों का दावा करती हैं और वे मिश्रित लिंग समूह और बड़े समूह, समान लिंग समूहों और छोटे समूहों की तुलना में कम स्थान (प्रति व्यक्ति) का दावा करते हैं।

5.3.2 सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार

क्षेत्रीयता का अध्ययन करने का एक अन्य प्रकार, व्यक्तियों से उनके व्यवहार और अनुभवों के बारे में पूछना है। सर्वेक्षण और साक्षात्कार जैसे आत्म-सूचना, विधियों का आशय यह है कि उत्तरदाता अपने व्यवहार को सटीक ढंग से बताने में सक्षम या इच्छुक नहीं भी हो सकते है। हालांकि, इन विधियों के आमतौर पर दो लाभ हैं: अध्ययन में बहुत अधिक संख्या में व्यक्तियों को शामिल करने के हेतु शोधकर्ता के संसाधनों को बढ़ाया जा सकता है, और उत्तरदातों के विचारों, विश्वासों और अन्य संज्ञानों का अध्ययन किया जा सकता है।

साक्षात्कार के दृष्टिकोण का एक अच्छा उदाहरण अली एवं कोडमनी (2012) द्वारा इजराइल में ऊँची इमारतों के 185 निवासियों पर किया गया एक अध्ययन है। 5 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों सहित 45 परिवारों के प्रत्येक सदस्य से उसके वास्तविक क्षेत्र के प्रासंगिक व्यवहार और संज्ञान के बारे में पूछा गया। उदाहरण के लिए निवासियों से पूछा गया –

क) जहाँ उन्होंने मकान के एक कमरे में विशिष्ट गतिविधियों में शामिल होना चुना (एक व्यवहार प्रश्न), और

ख) जो, उनकी राय में, मकान के अन्दर विभिन्न स्थानों के मालिक है (एक अनुमति प्रश्न)।

5.3.3 प्राकृतिक पर्यवेक्षण एवं अप्रत्यक्ष उपाय

मानव क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता का अध्ययन करने के लिए एक और कार्यनीति है, जिसके द्वारा सतर्क रूप से तथा संरचनाबद्ध रूप में चल रहे क्षेत्रीय व्यवहार का निरीक्षण होता है। उदाहरण के लिए शोधकर्ता यह देख सकता है कि कैसे बालक विद्यालय के खेल के मैदान के कुछ क्षेत्रों पर कब्जा किये रहते हैं और उनका बचाव करते हैं।

जब अप्रत्यक्ष उपायों को प्रयुक्त किया जाता है, तब अनुसंधानकर्ता उन वस्तुओं की संख्या और स्थान की गणना करता है जिन्हें व्यक्ति किसी स्थान को नियंत्रित करने के लिए प्रयोग में लाते हैं। उदाहरण के लिए किसी विश्वविद्यालय के कैफेटेरिया का आमतौर पर इतना अधिक उपयोग किया जाता है कि मध्याह्न भोजन के लिए जाने वाले अनुभवी विद्यार्थी पहले किसी खाली सीट का पता कर पाएं हैं, जहां वे अपनी किताबें मेज पर और उसी के पीछे अपना कोट टांगते हैं, फिर भोजन की लाइन में लगते हैं।

क्षेत्रीयता के दो विशिष्ट अप्रत्यक्ष उपाय चिन्हक और वैयक्तीकरण है। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि क्या कुछ जातीय समूह क्षेत्रीयता को भिन्न रूप से दर्शाते हैं तो विनीत रूप से उस मूल्य की तुलना कर सकते हैं जो वे अपने सामने के वाड़े को वैयक्तिकत करते है। वर्गर अन्य (2016) ने उल्लेख किया गया है कि आंतरिक शहर स्लेविक में अमेरीकियों ने अपने गैर-स्लेविक पड़ोसियों की अपेक्षा अपने वाड़े को अधिक वैयक्तीकृत किया। स्लैवियों ने अपने बाड़े को और अधिक परिदृश्यित किया, अपने घरों को उत्तम बनाये रखा और अधिक पौधा रोपण को ध्यान में रखा।

5.4 क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले कारक

क्षेत्रीयता को प्रभावित करने वाले अनेक कारक निम्नलिखित हैं –

5.4.1 वैयक्तिक कारक

क) लिंग – क्षेत्रीयता में लिंग, आयु और वैयक्तिक विशेषताओं एवं व्यक्तित्व के रूप में भिन्नता होती है। यह देखा गया है कि पुरुष महिलाओं की तुलना में बड़े क्षेत्रों की दावा करते हैं। पुरुष अभी भी महिलाओं की तुलना में अधिक वार उच्च प्रस्थिति वाले व्यवसायों को चुनते है, इस प्रकार, अधिक से अधिक काम पर बड़े स्थानों पर दावा करते हैं। यहां तक कि उच्च प्राप्त करने के पूर्व भी जब पुरुष और महिला उनकी विद्यार्थी अवस्था में ही होते हैं, वे उच्चतर क्षेत्र घटित करने का दावा करते है।

ख) व्यक्तित्व एवं बुद्धि – दोनों लिंग के अधिक बुद्धिमान निवासी आमतौर पर अपने लिए बड़े क्षेत्रों को चिन्हित करते हैं, और जो पुरुष अधिक आशंकित होते हैं वे बड़े क्षेत्रों को चिन्हित करते है। स्त्रियाँ जो अधिक आत्मविश्वासी होती है लेकिन कम प्रभावशाली होती हैं, वे बड़े क्षेत्रों से अलग होती है।

नतीजे से ज्ञात होता है कि लिंग और व्यक्तित्व क्षेत्रीयता में एक अर्न्तःस्थापित भूमिका का निर्वहन करते हैं।

ग) **सामर्थ्यता** – किसी की व्यक्ति क्षमता का स्तर भी क्षेत्रीय कार्य को बहुत हद तक प्रभावित करता है। जिन निवासियों को कम सहायता की आवश्यकता होती है, वे न केवल सार्वजनिक क्षेत्रों में बल्कि अपने प्राथमिक क्षेत्रों में भी अधिक क्षेत्रीय होने का गुण दिखलाते है। जो निवासी मानसिक रूप से अधिक सर्तक थे वे अपने प्राथमिक क्षेत्रों में अधिक क्षेत्रीय थे, लेकिन जो निवासी मानसिक रूप से कम सतर्क थे वे सार्वजनिक क्षेत्रों में अधिक क्षेत्रीय थे।

5.4.2 सामाजिक कारक

क) **सामाजिक वातावरण** – ऐसा प्रतीत होता है कि पड़ोस का वातावरण क्षेत्रीयता को प्रभावित करता है। टेलर गॉट फ्रेडसन और ब्राडनर (1981) द्वारा 12 बाल्टीमोर जिले में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि अनुकूल सामाजिक वातावरण उत्तम क्षेत्रीय कार्यशीलता से जुड़ा है। अधिक सौहार्दपूर्ण परिवेश में, निवासी घुसपैठियों से पड़ोसियों को अच्छी प्रकार से अलग करने में सक्षम थे, क्षेत्रीय नियंत्रण की कम समस्याओं का अनुभव करते थे और पड़ोस के स्थान के लिए अधिक जिम्मेदारी महसूस करते थे।

ख) **सामाजिक वर्ग** – क्षेत्रीयता पड़ोस और उसके निवासियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ बदलती रहती है। नीचे के वर्ग के पड़ोस में, व्यक्ति का घर प्राथमिक क्षेत्र के रूप में कार्य करता है, लेकिन स्वामित्व और नियंत्रण अक्सर सामने के दरवाजे पर ही समाप्त हो जाता है। उस दरवाजे के ठीक बाहर, घर के बाहर, अवांछित गतिविधियां हो सकती हैं। निवासी अधिकांशतः महसूस करता है कि घर के बाहर नियंत्रण असंभव है और इसे नियंत्रित करने के प्रयास बन्द कर देता है। मध्यम वर्गीय पड़ोस में क्षेत्र की भावना अधिक बार बाहर बाड़े तक तथा कुछ हद तक पड़ोस की गली के ऊपर और नीचे तक फैली होती है। उच्च वर्ग के पड़ोस में, क्षेत्रीय कामकाज कभी-कभी पूरे पड़ोस में फैल जाता है।

ग) **संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा** – क्षेत्रीयता का एक और प्रमुख कारक, संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा है। जब व्यक्ति संसाधनों के लिए दूसरों के साथ संघर्ष करते है तब आप अधिक क्षेत्रीय व्यवहार की अपेक्षा कर सकते है। प्रत्येक दिन का अनुभव बताता है कि जब कैफेटेरिया कुर्सियों, पुस्तकालय में जगह या किसी अन्य संसाधन की कमी होती है, तब व्यक्ति संसाधन के अपने भाग को संरक्षित करने के लिए क्षेत्रों को चिन्हित वैयक्तिगत, दावा और बचाव करना शुरू कर देंगे। एलिजावेथ कैशडन (1980) ने अफ्रीकी बुशमेन जाति के अपने अध्ययन से कुछ तर्क एवं सबूत प्रस्तुत किये है। उनके विचार में क्षेत्रीयता तब होती है जब संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा होती है। हालांकि बचाव के विभिन्न स्वरूपों का उपयोग तब किया जाता है जब संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं या दुर्लभ होते है। व्यक्ति अपने क्षेत्रों को सामाजिक

सीमा बचाव तंत्र के माध्यम से नियंत्रित करते हैं जिसमें मालिक समूह प्रतिस्पर्धा मालिक समूहों के सदस्यों द्वारा क्षेत्रों तक पारस्परिक पहुंच पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। सीमा स्वयं में इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, बजाय इसके कि एक क्षेत्र के आंगतुकों को मस्तिष्क के क्षेत्र में प्रवेश करने किए विभिन्न अनुष्ठानों से गुजरना पड़ता है। एक बार जब वे ''अपना बकाया चुका देते हैं'' तब क्षेत्र के संसाधनों में या उपयोग करने के लिए उनका स्वागत है।

घ) **कानूनी स्वामित्व** – क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता में एक अन्य सामाजिक कारक कानूनी स्वामित्व है। किरायेदार एवं घर का मालिक दोनों आवासीय क्षेत्र को इस अर्थ में नियंत्रित करते हैं कि उन्होंने क्षेत्रीयता को परिभाषित किया है, लेकिन कानूनी स्वामित्व गृहस्वामी के क्षेत्रीय व्यवहार को बढ़ाता प्रतीत होता है। विशेष रूप से जब मौलिक किरायेदारों की अपेक्षा वे निजीकरण में अधिक संलग्न होते है।

ड़) **नियत कार्य** – जब हम किसी सार्वजनिक क्षेत्र में होते हैं लेकिन किस विशेष कार्य में संलग्न होते है, तब उस क्षेत्र का अधिक बचाव कर सकते हैं यदि हम कुछ विशेष नहीं कर रहे होते हैं। सार्वजनिक टेलीफोन पर कॉल करने वालों के एक अध्ययन में पाया गया कि जब कोई फोन का इंतजार कर रहा होता था तब लोग अपनी कॉल लम्बे समय तक जारी रखते थे (रुबेक, पेप एवं डोरियर, 1989)।

5.4.3 भौतिक कारक

जॉनी जेकब ने 1961 तथा ऑल्कर न्यूमॉन ने 1973 में भौतिक कारकों जो क्षेत्रीयता को प्रभावित करते हैं, की व्याख्या करने हेतु सुरक्षात्मक स्थान सिद्धांत के माध्यम से तर्क प्रस्तुत किया। उनका मत था कि आवासीय अपराध और अपराध का भय क्षेत्रीय आक्रमण से संबंधित दो घटनाएँ है। सिद्धांत यह दर्शाता है कि कुछ ऐसी निश्चित रचना लक्षण हैं – जैसे निजी क्षेत्र से सार्वजनिक क्षेत्र को पृथक करने के लिए वास्तविक या प्रतीकात्मक बाधाएं और क्षेत्र के स्वामियों के लिए अपने स्थानों में संदिग्ध गतिविधि का निरीक्षण करने के अवसर, निवासियों की सुरक्षा की भावना को बढ़ाना और अपराध को कम करना इत्यादि।

उदाहरण तौर पर किसी दो उन क्षेत्रों में अधिक अपराध का संदेह हो सकता है जिनकी कम निगरानी कम की जाती है एवं वे किसी के द्वारा नियंत्रित भी नहीं दिखते हैं। सोचर (1987) द्वारा किए गये एक अध्ययन में बताया गया है कि न्यूनतम निगरानी वाले स्थानों में कारों को खड़ा कर दिया गया था। विश्वविद्यालय के निवास, हॉल में एक अन्य अपराध के अध्ययन में दर्शाया गया कि जो हॉल सुरक्षात्मक स्थान विशेषताओं से भरे-पूरे थे (जहां निवासी अधिक नियंत्रण एवं निगरानी रख सकते थे) की अपेक्षाकृत जो इन विशेषताओं से युक्त नहीं थे, वहां कम अपराध हुआ। (सोमर, 1987)।

5.4.4 सांस्कृतिक और नृजातीय कारक

विभिन्न संस्कृतियों में क्षेत्रीयता को अलग-अलग तरीके से व्यक्त किया जाता है। फ्रांसीसी एवं जर्मनी समुद्र तटों पर क्षेत्रीयता के एक अध्ययन को पहले के अमेरिकी अध्ययन पर बारीकी से प्रतिरुपित किया गया था, जिससे जर्मन, फ्रेंच और अमेरीकियों की समुद्र तट क्षेत्रीयता में परस्पर तुलना की जा सके। तीनों संस्कृतियां कुछ मामलों में एक जैसी थी (स्मिथ, 1981)। उदाहरण के लिए –

क) सभी संस्कृतियों में बड़े समूह प्रति व्यक्ति छोटे स्थानों का दावा करते हैं।

ख) पुरुषों और महिलाओं से बने समूह प्रति व्यक्ति छोटे स्थान होने का दावा करते हैं।

ग) महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा कम स्थान का दावा करती हैं।

हालांकि अन्य मामलों में संस्कृतियां भिन्न होती है। फ्रांसीसी कम क्षेत्रीयता दिखाते है। उन्हें क्षेत्रीयता के सम्प्रत्यय के साथ कुछ कठिनाई थी, अक्सर यह कहा जाता है कि समुद्र तट सभी के लिए होता है। जर्मन बहुत अधिक चिन्हक में संलग्न थे। उन्होंने अक्सर रेत के रूप में बाधाओं को खड़ा किया, और यह घोषणा की कि उनके क्षेत्र दो विशेष तिथियों को आरक्षित थे तथा चिन्हक बताते है कि कुछ क्षेत्रों को कुछ समूहों के लिए आरक्षित किया गया था।

अन्ततः तीन संस्कृतियों के मध्य क्षेत्रीय आकार थोड़े भिन्न थे, लेकिन क्षेत्रों के आकार थोड़े समान भी थे। जर्मनी ने अधिकतर बहुत बड़े क्षेत्रों का दावा किया, परंतु तीनों संस्कृतियों में वैयक्तिक रूप से अधिक अंडाकार क्षेत्रों को चिन्हित किया और समूहों ने अधिक गोलाकार क्षेत्रों को चिन्हित किया।

5.5 क्षेत्रीयता के सिद्धांत

क्षेत्रीयता या प्रादेशिकता के कुछ महत्वपूर्ण सैद्धांतिक दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं:

5.5.1 जीन और क्रमिक विकास की भूमिका

रॉफ टेलर (1988) ने अपने मौलिक कार्य *ह्यूमन टेरिटोरियल फंकशनिंग* में वैयक्तिक और छोटे समूह क्षेत्रीय संज्ञान व्यवहार और संज्ञान पर एक अनुभवजन्य विकासवादी दृष्टिकोण ने मानव क्षेत्रीयता के लिए विकासवादी एवं आनुवांशिक आधारों को व्यापक रूप से स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा है कि क्षेत्रीय कार्यशैली हमारी विकासवादी विरासत का एक उत्पाद है। अफ्रीकी सवाना में घूमने वाले शिकारियों के गिरोहों के रूप में हमारे प्राचीन इतिहास ने हमारी वर्तमान क्षेत्रीयता की सामान्य प्रकृति को आकार दिया। टेलर के अनुसार क्योंकि क्षेत्रीयता एक छोटे समूह के सन्दर्भ में विकसित हुई आज भी यह केवल वैयक्तिक एवं लघु समूहों पर ही लागू होती है, न कि राष्ट्रों जैसे बड़े समूहों पर। टेलर का मानना है कि हमारी वर्तमान क्षेत्रीय कार्यशैली में सम्मिलित व्यवहार प्रक्रियाएं बहुत पहले विकसित हुई

व्यवहार प्रक्रियाओं के समान है, भले ही वे एक भी उद्देश्य की पूर्ति न कर पाये या उनके समान परिणाम प्रस्तुत करें। अन्त में, टेलर का दावा है कि क्षेत्रीयता के विकासवादी आधार का अर्थ यह नहीं है कि यह हमारे जीनों में 'यंत्रस्य' है।

5.5.2 एक अन्तःक्रिया आयोजक

जुलियन एडनी (1972) का मानना है कि मानव क्षेत्रीयता मानव व्यवहार को व्यवस्थित करने का काम करती है ताकि हिंसा, आक्रामकता और अधिक प्रभुत्व अनावश्यक रूप से न हो। जब व्यक्ति या समूह किसी व्यवस्था को नियंत्रित करता है, तो व्यवहार के बहुत से पहलू व्यवस्थित हो जाते हैं जिनमें कार्यकलाप की पसंद, संसाधनों तक पहुंच एवं व्यवहार संबंधी प्रथाएं भी शामिल हैं। बहुत से व्यक्ति जो दूसरों द्वारा नियुक्त किये गये हैं अंशतः वित्तीय कारणों से स्वयं एक व्यवसाय का स्वामी होने का सपना देखते हैं, किन्तु ऐसा इसलिए भी है कि वे अपने कार्यस्थल की नीतियों एवं भौतिक पहलुओं को संगठित और नियंत्रित कर पाएं। उदाहरण के लिए बच्चे स्वयं के निजी कक्ष चाहते हैं ताकि उनकी गतिविधियां और सजावट के लिए उनके सहोदर भाई-बहन के साथ समझौता न करना पड़े। इस प्रकार, क्षेत्र की तलाश का एक प्रेरक तत्व स्वयं इनके व्यवस्थापन का विशेषाधिकारों को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त करना है।

5.5.3 व्यवहार निर्धारण सिद्धांत

पारिस्थितिक मनोवैज्ञानिक क्षेत्रीय व्यवहार को व्यवहार-निर्धारण के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। क्षेत्रीयता का आयोजन कार्य पारस्थितिक मनोवैज्ञानिक जनक रोजर बार्कर के कार्य की अवधारणाओं के समान है। पारिस्थितिकीय मनोविज्ञान में एक कार्यक्रम 'व्यवस्थापन में लोगों' और चीजों के मध्य अन्योन्य क्रिया का एक निर्धारित अनुक्रम है''। पारिस्थितिकीय मनोविज्ञान की अन्य अवधारणाओं में स्पष्ट रूप से नियंत्रण की अवधारणा शामिल हैं। उदाहरण के लिए, संवेदन क्रियाविधि और कार्यकारी तंत्र (आमतौर पर व्यक्ति के नियंत्रणाधीन होता है किन्तु कभी-कभी थर्मोस्टेट की तरह क्रियाविधि एक तंत्र) गलत स्थितियों के लिए निर्धारण की जांच करते हैं और उन्हें सही करते है।

अपनी प्रगति की जांच करें 2

1) क्षेत्रीयता के अध्ययन में क्षेत्र प्रयोग एवं क्षेत्र अध्ययन के बीच अन्तर को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

2) क्षेत्रीयता के संबंध में क्रमिक विकास के परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

5.6 समुदाय रचना की अवधारणा

'समुदाय अभिकल्प' पद मूलतः योजना निर्माण और निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थानीय लोगों की भागीदारी के लिए 1960 के दशक में गढ़ा गया है। यह विश्वभर में मानवाधिकारों के संबंध में जागृति उत्पन्न करने और इसकी की कालावधि थी। योजना एवं अभिकल्प में समुदाय की भागीदारी, इस मामले में समकालीन योजनाकारों, रचनाकारों और विद्वानों को उन आदर्श और विचारधारा का प्रसार प्रतीत होता है। जो चार दशक पहले मुख्यधारा में थे (सनॉफ, 2000)। इस आन्दोलन की शुरुआत से लेकर समुदाय रचना की समझ तथा ''समुदाय स्वयं'' और ''भागीदारी'' जैसे मौलिक शब्दों के पीछे का अर्थ बदल गया है। जबकि इस प्रकार के बदलाव का सामुदायिक अभिकल्प के प्रौक्टिशनर पद कई रूपों में प्रभाव पड़ता है, इस बदलाव को अपने आप में प्रयोगमूलक आधार की वैचारिक भी माना जाता है।

सीमा चिन्ह अध्ययनों जैसे अर्नस्टीन (1969) एवं वुल्ज (1986) ने 60 के दशक के उत्तरार्ध से 80 के दशक के इस बदलाव हेतु उदाहरण प्रस्तुत किया है तथा वर्तमान के अध्ययन इस प्रवृत्ति की निरंतरता की पुष्टि करते हैं (टोकर मुद्रण में)। हालांकि, 1990 के दशक के बाद से एक व्यावहारिक समझ की ओर बदलाव ने योजना बनाने के निर्णय में लोगों की भागीदारी के विचार के अदभुत परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। मुख्यधारा में लोकप्रिय योजनाकारों/रचनाकारों द्वारा ''भागीदारी'' शब्द का उपयोग नई शैलियों के निर्माण और प्रचार के लिए उत्तोलन प्रदान करने के लिए इस प्रवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता है (डयूने और प्लॉटर जाइवर्क, 1992)।

वैचारिक आधार से व्यवहारमूलक आधार पर बदलाव ने कई तरह से समुदाय रचना की बढ़ती लोकप्रियता में योगदान दिया है। सर्वप्रथम, 1960 के दशक (एलिन्सकी, 1972) के विरोधी अभिवृत्तियों को लेकर अपने सहयोगात्मक निर्णय लेने कर प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करने के फलस्वरूप प्रयोगमूलक उपागम की महिम प्रकृति को बहुत अधिक प्राथमिकता दी गई हैं। दूसरा, कई अनुभववादियों द्वारा महसूस किया गया कि समुदाय रचना के व्यवहारमूलक पहलुओं पर अधिक ध्यान दिए जाने के साथ रचना और योजना बनाने की प्रक्रियाओं में लोक भागीदारी के महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणामों का आना संभव हो गया है। इस संदर्भ में बढ़ती लोकप्रियता, यद्यपि किसी कारणवश, योजना और रचना में विचार की उत्परिवर्तित सीमाओं का लाभ उठाने में एक युक्ति के रूप में उपयोग करने हेतु समुदाय रचना के अभ्यास को खुला छोड़ दिया गया है। इस प्रकार के दृष्टिकोण (यथा नया शहरीकरण), समुदाय रचना को अवधारणा इस प्रकार से करते हैं कि समुदायों को भौतिक

संस्थाओं में बदल देती है तथा रचना पर ध्यान, केन्द्रित करती है क्योंकि यह भवन के पहलुओं और अभिविन्यास से संबंधित है (हार्वे, 1997), (सोरकिन, 1998)।

विशेष रूप से नए नगरीकरण में स्थानिक पहलुओं पर इस प्रकार अधिक बल स्थानिक नियतत्ववाद को प्रतिध्वनित करता है; जो सामाजिक गत्यात्मकता को स्वरूप देने में वास्तुकला की शक्ति को अधिक महत्व प्रदान करता है (सोरकिन, 1998; टालने, 1999; हाइडन, 2003; टोरे, 1999)। विचारवादी या व्यवहारवादी समुदाय रचना हमेशा समुदायों के निर्माण एवं समुदायों की रचना के विषय में रही है (सनॉफ, 2000) और सदैव स्थानिक नियतत्ववाद के समर्थकों के साथ अनेक बाधाओं रही हैं। इसलिए नए शहरीकरण के संदर्भ में समुदाय रचना को केवल धरम भागीदारी का एक उदाहरण माना जा सकता है, जो समुदाय रचना के बढ़ती लोकप्रियता का परिणाम प्रतीत होता है चूंकि सनॉफ (2000) वास्तविक भागीदारी को छद्म भागीदारी से पृथक करते हैं, उनका दावा है कि जब तक निर्णय लेने की शक्ति प्रतिभागियों के हाथों में नहीं है और उन्हें इस संबंध में जानकारी से अवगत कराया जाना है कि उनके निमित्र क्या योजना बनाई गई है, यह वास्तविक भागीदारी नहीं हो सकती है। इसे वास्तविक स्वरूप देने के लिए भागीदारी प्रक्रिया को प्रतिभागियों को निर्णयों और किये गये कार्यों के नियंत्रण में रखना होगा। आज समुदाय रचना की तस्वीर कार्य के मुख्य दो क्षेत्रों को दर्शाती है एक रूपरेखा जिसके प्रमुख वैशिष्टय में वास्तविक भागीदारी और 'छदम भागीदारी' अंतग्रर्धित है सनॉफ (2000)।

5.7 क्षेत्रीयता और समुदाय रचना

किसी अभिकल्प विशेष के संदर्भ में प्रयुक्त होने की दशा में क्षेत्रीयता को उन योजनाओं में सन्निहित किया जाना चाहिए जहां यह सेवार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति करना हुआ प्रतीत होता है अर्थात, यह क्षेत्रीयता से जुड़े मानव व्यवहार प्रतिमान की सूची के आधार पर क्षेत्रीयता के लिए रचनाओं को आक्रमकता को कम करने, नियंत्रण बढ़ाने और निर्देश और बचाव की भावना को बढ़ावा देने के निर्मित है। कुछ शोधों द्वारा समर्थित तथा अब तक रिपोर्ट किए गये किसी भी व्यक्ति द्वारा अस्वीकार किए गये एक साहसिक निष्कर्ष यह है : जितना अधिक एक रचना घर, विद्यालय और कार्य स्थल पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्राथमिक क्षेत्र प्रदान कर सकता है, उतना ही उत्तम है।

प्राथमिक क्षेत्रों की आपूर्ति पर एक महत्वपूर्ण प्रतिबंध है, स्थान या जगह की कीमत ज्यादा हो सकती है। दूसरा प्रतिबंध कुछ संगठनों की नीतियां है, जिसके लिए कर्मचारियों को पर्यवेक्षक की प्रत्यक्ष निगरानी में होना आवश्यक है। एक अन्य तीसरा प्रतिबंध यह है कि कुछ नौकरियों की मूल प्रकृति ही ऐसी होती है जिनमें कार्यरत व्यक्तियों तक पहुंच अपेक्षित होता है। अग्रिम पंक्ति वाले कर्मचारियों का एकमात्र आश्रय कर्मचारी कक्ष और कॉफी ब्रेक है।

बहुत सी नौकरियों में समूहों को दिन के अधिकांश समय गहन संचार में एक साथ काम करना चाहिए। व्यक्ति ऐसी नौकरियों में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं यदि

प्रत्येक एक अलग प्राथमिक क्षेत्र में स्थित है। हालांकि क्षेत्रों पर समूहों का दावा हो सकता है। ऐसे कार्य समूहों का स्वयं का सामूहिक प्राथमिक क्षेत्र होना चाहिए। अनेक घरों, कार्य स्थलों और संस्थागत व्यवस्थाओं में व्यक्तियों एवं समूहों के लिए प्राथमिक या द्वितीयक क्षेत्र प्रदान करने के लिए और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। कई बार किसी ने गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया है कि एक स्वामित्व वाली जगह तक पहुंच से प्रभावित व्यक्तियों के जीवन में सुधार किस प्रकार से सुधार किया जा सकता है।

इस अनुभाग में पड़ोस और अस्पतालों की क्षेत्रीयता के लिए कुछ सुझावों का परीक्षण किया जाएगा। इन विशेष पर्यावसान के लिए अभिकल्प संबंधी अनुशंसाएँ की गई थीं, लेकिन थोड़ी सी कल्पना के साथ, हम समान सिद्धांतों का उपयोग करके अन्य परिस्थितियों के लिए अभिविन्यास की कल्पना कर सकते हैं। छोटी व्यवस्थापन (जैसे हमारे अपने घर) में बदलाव की तुलना में बड़े व्यवस्थापन (जैसे पड़ोस) की रचना में बदलाव करना अधिक कठिन होता है। फिर भी पूरे पड़ोस को पृथक-पृथक उपाधि के लिए क्षेत्रीकृत किया गया है।

5.7.1 पड़ोस

जब निवासियों की ऐसी मान्यता होती है कि उनकी सड़कों पर यातायात का अधिक आवागमन होता है, तो पड़ोस के माध्यम से वाहनों की आवाजाही को रोकने हेतु शहरों में अधिकांशताः सड़कों को बन्द करने के लिए कहा जाता है। यात्रीगण निश्चित रूप से मानते हैं कि सड़कें उन्हें कुशलता से काम करने और आने-जाने में सहायता करने के लिए हैं। बच्चों की सुरक्षा और यातायात के शोर के बारे में चिंता पड़ोस के निवासियों के लिए बाधाओं के स्पष्ट करना है, परन्तु पड़ोस के क्षेत्रीयकरण के कदम से कम स्पष्ट लाभ हो सकते हैं।

बंद सड़कों का होना निवासियों को एक नियंत्रण एवं पहचान की भावना प्रदान करने का कार्य करता है। जो कारें अब सड़कों से गुज़रती हैं, वे पड़ोसियों के स्वामित्व में हैं। क्योंकि कुछ ही कारें होती हैं और निवासियों के पास अजनबियों को पहचानने का अच्छा मौका होता है। यह अपराध को कम करने का काम कर सकता है क्योंकि निवासियों द्वारा प्रत्येक कार पर ध्यान दिया जाता है। सेंधकार (चोर) जिनके पास चुनने के लिए कई पड़ोस हैं, एक अधिक गुमनाम पड़ोस का चयन करना चाहेंगे। बचाव स्थान सिद्धांत पड़ोस के रचना परिवर्तनों का समर्थन करेगा जो निवासियों के स्वामित्व की भावना को बढ़ाता है और उस स्थान को समाप्त करता है जिसके बारे में कोई विशेष रूप से सतर्क अनुभव नहीं करता है, और उस स्थान को बढ़ाता है जिसे निवासियों द्वारा आसानी से देखा जाता है।

दुर्भाग्य वश, पूरे पड़ोस को बदलना राजनीतिक रूप से जटिल है। उदाहरण के लिए, यातायात बाधाओं का विरोध न केवल उन यात्रियों द्वारा किया जाता है बल्कि पड़ोस में निवास कर रहे लोगों द्वारा भी विरोध किया जाता है जो नए अवरोधों के परिणामस्वरूप बढ़े हुए यातायात का अनुभव करते हैं। वैयक्तिक घरों में छोटे पैमाने पर परिवर्तन होते हैं उदाहरण के लिए राजनीतिक रूप से अधिक आसान, परन्तु उनमें से कुछ को मूल्य उस वैयक्तिक गृहस्वामी के लिए अधिक होती है।

समस्या को कभी-कभी एक अलग सड़क स्वरूप बनाकर हल किया जा सकता है, जब पड़ोस की मुख्य रूप से रचना की गई हो या किसी खंड में सड़क व्यवस्था को पुनर्व्यवस्थित करके। एक अध्ययन से मालूम हुआ है कि बंद मार्ग के निवासियों का मानना है कि उनके पास, अपनी गली का विशेष उपयोग है, वे अजनबियों से पड़ोसियों को आसान ढंग से पृथक कर सकते हैं और उनके पास सड़कों पर के पास रहने वाले निवासियों की तुलना में सुरक्षित एवं उत्तम रखरखाव वाली सड़कें हैं।

5.7.2 अस्पताल

कोई भी अस्पताल में भर्ती होना नहीं पसंद करता है। स्पष्ट कारण के अतिरिक्त (अस्पताल में होने का कारण है बीमारी या कोई चोट), अन्य कारण एक और है कि जिस प्रकार से अस्पतालों में जगह का प्रबंधन किया जाता है उसी प्रकार से हम अपने रहने वाले स्थान का आनंद नहीं उठा सकते हैं। निश्चित रूप से हम एक ऐसी व्यवस्था में जाते है जहां हमारे पास कोई पूर्व स्थापित क्षेत्र नहीं ही तुरंत ही यह हमारे नियंत्रण एवं सुरक्षा की भावना को प्रभावित करता है। यहां तक कि अगर हमें एक स्वयं का कमरा या बिस्तर दिया जाता है, तब हम एक माध्यमिक क्षेत्र में व्यवहार करने के लिए मजबूर हो जाते हैं (जैसे सोना, संवरना, और निजी मामलों पर चर्चा करना) क्योंकि हम अपने प्राथमिक क्षेत्र में व्यवहार करने के आदी हैं। उदाहरण के लिए यदि हमारे पास ताला लगाने लायक कोई अलमारी नहीं है तो हमारी समझ यह है कि हम नियंत्रित कर सकते हैं कि हमारी संपत्ति से समझौता किया गया है।

इसका अन्तर यह है कि जहां भी संभव हो मरीजों को निजीकरण तथा नियंत्रण की अनुमति दी जाए। ताला लगाने योग्य अलमारी, देखने योग्य बुलेटिन बोर्ड, और तस्वीरों पुस्तकों और अन्य सार्थक वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए अधिक मेज स्थान कुछ सुझाए गए रचना परिवर्तन है। इससे भी सरल नियम यह हो सकता है कि कर्मचारी अपनी पहुंच के भीतर मरीजों को छोटी चीजों की व्याख्या करने के आसान तरीके का सम्मान करने के लिए कहें। कुछ सबूत हैं कि प्राथमिक क्षेत्रों के निर्माण का लाभकारी प्रभाव वालिवारा इत्यादि (2013) द्वारा आयोजित एक नर्सिंग होम में एक अध्ययन से आता है। दोहरे लिए गये कमरों में, दृश्यमान चिन्हक जो कमरे को दो अलग-अलग स्थानों में बांटा गया है, जो निवासियों के आत्म सम्मान और पर्याप्तता की भावना को अग्रसर करते हैं।

जैसा कि अधिकांश परिस्थितियों में होता है, इनमें से कुछ रचना परिवर्तनों के विरूद्ध प्रबल दबाव होता है। कुछ सहयोगी सदस्य शिकायत करते हैं कि मेज बोझिल है अलमारी मूल्यांकन स्थान लेती है, और बुलेटिन बोर्ड मंहगे हैं। कुछ कर्मचारी फर्नीचर और वैयक्तिक कब्जे की मूर्खतापूर्ण व्यवस्था के कारण अक्षमता पर आपत्ति जताते हैं। मुद्दा यह है कि क्या संस्थान मुख्य रूप से मरीजों या कर्मचारियों के कल्याण के लिए मौजूद है। हैरानी की बात यह है कि अक्सर अस्पतालों और अन्य संस्थानों की व्यवस्थाओं को देखते हुए, जबाव यह है कि स्टॉफ की आवश्यकता पहले आती है।

निःसंदेह, कर्मचारियों की जरूरते वैध हैं। हालांकि, अधिकांशतः रोगी की जरूरतें अवांछनीय होती हैं क्योंकि उनकी बीमारी, चोट और अस्थायी स्थिति उनकी जरूरतों को प्रभावी ढ़ग से आवाज उठाने की उनकी क्षमता को कम कर देती हैं। फिर भी प्रत्येक मरीज अस्थायी है समान आवश्यकता वाले समान रोगियों की एक स्थायी धारा अस्पताल से होकर बहती है।

सहयोगी बनाम मरीज रचना दुनिया का सबसे उत्तम समाधान होगा जब रचनाकार दोनों समूहों की लागत और लाभ पर समूहों की जरूरतों और आधार, वास्तुकला परिवर्तन दोनों की सावधानीपूर्वक जांच करेंगे। कर्मचारियों की दक्षता पर मरीज की गोपनीयता और क्षेत्रीयता के पक्ष में अधिक परिवर्तन की आवश्यकता है क्योंकि इस बिन्दु पर कर्मचारियों की जरूरतें आमतौर पर प्रबल होती हैं। कुछ मौजूदा बाधाओं के बावजूद स्थानिक व्यवस्था में सुधार किया जा सकता है ताकि एक इमारत में हर एक प्राणी उत्तम तरीके से रह रहा हो। पर्यावरणीय रचना जिनमें रचनात्मक रूप से क्षेत्रीयता शामिल है, जीवन की गुणवत्ता में काफी सुधार कर सकते हैं।

5.8 क्षेत्रीय व्यवहार के शोध साक्ष्य

कई अध्ययनों में क्षेत्रीय दखलकारी, घुसपैठ और सुरक्षा पर समूह के आकार, संस्कृति और लिंग के प्रभाव का परीक्षण किया गया है। समुद्र तट क्षेत्रों में दखलकारी समय में वृद्धि के साथ समान लिंग समूह बड़े स्थान का दावा करते हैं जबकि मिश्रित-लिंग समूह अधिक चिन्हकों का उपयोग करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मिश्रित लिंग समूह अपनी क्षेत्रीय सीमाओं को अभुण्ण रखने के लिए चिन्हक का प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, समान लिंग समूह सीमाओं को अचिन्हित रखते हैं ताकि सीमाओं के बाहर समूहीकरण किया जा सके। साक्ष्य बताते है कि समूह के आकार में वृद्धि के साथ, प्रति व्यक्ति औसत स्थान कम हो जाता है। एडनी एवं जॉर्डन एडनी, (1974), हालांकि यह मित्रों के समूह के लिए सत्य हो सकता है लेकिन अजनबियों के लिए नहीं (एडनी एवं ग्रंडमेन, 1979)। इस प्रकार, क्षेत्रीय व्यवहार वैयक्तिक और स्थितिजन्य कारकों से प्रभावित होता है। ऐसा प्रतीत है कि पुरुष समुद्र तटों और शयनग्रहों में महिलाओं की अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्रों को पसंद करते है (गिफर्ड, 1987)।

अध्ययनकर्ताओं ने उन तरीकों की जांच की है जिनमें विभिन्न देशों के लोग विशेष रूप से छुटिट्यों में समुद्र तट की जगह के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। जर्मन, फ्रांसीसी और अमेरीकियों पर स्मिथ (1981) द्वारा किए गए अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि पुरुषों ने अपनी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना महिलाओं की तुलना में अधिक स्थान का दावा किया और समूह युगल या वैयक्तिक रहने वालों की अपेक्षा प्रति व्यक्ति का स्थान घेरते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मतभेदों की जानकारी भी दी गई थी, इनसे पता चला कि जर्मन रेखाओं को खड़ा करके अधिक क्षेत्रीय अंकन में लगे हुए हैं और अपने फ्रांसीसी और अमेरिकी समकक्षों की अपेक्षाकृत बड़े स्थान का दावा करते हैं। अन्त में आकृतियों में समानता देखी गई। हालांकि व्यक्तियों द्वारा किए गए चिन्हक अण्डाकार थे और उन क्षेत्रों को चिन्हित करने वाले समूह भी आकार में गोलाकार थे। यौन अन्तर के संबंध में शैफर, और सैडोव्स्की (1975) द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि एक बार में पुरुष

चिन्हकों को कम परीक्षणों पर कब्जा दर्शाया गया और जब दावा या कब्जा किया जाता है तब महिलाओं की तुलना में अधिक लंबे समय तक क्षेत्र का बचाव करते हैं। इसके अतिरिक्त, किसी भी मामले में अकेले कब्जाधारी वे पुरुष क्षेत्र पर आक्रमण नहीं किया। एक अध्ययन में हैबर (1980) ने संधियों को निर्देश दिया कि वे पुरुष और महिला छात्रों के कक्षा मेज क्षेत्रों पर कब्जा करें। जब क्षेत्र में रहने वाले पुरुष थे तब संघ नियोजित कब्जा करने को सक्षम नहीं थे। इसके विपरीत संख्या दोगनी होने पर कब्जा करने में सक्षम थे। ऐसा लगता है कि संघ पुरुष क्षेत्रों पर आक्रमण करने के लिए अनिच्छुक थे। जब कैफेटेरिया की मेजों पर कब्जा किया गया तो पुरुषों आक्रमणकारियों से असहयोगी बातें कहने की अधिक संभावना थी (कैल्सिन, 1976) अन्य विद्धानों ने पाया कि जब आक्रमण किया गया, तब पुरुषों और महिलाओं दोनों के अपने पुस्तकालय की सीटों को वापस लेने को समान रूप से संभावना थी (मैक एंड्रयू रिकमैन हॉर्र एवं सोलोमन, 1978)। इस तरह, क्षेत्रीय व्यवहार संस्कृतियों और यौन प्रभावों के बीच कुछ भिन्नता दिखता है।

शायद कतिपय परिस्थितियों में, जैसे किसी खेल या फिल्म थियेटर में चिन्हकों द्वारा जगहों का बचाव करना कम प्रभावी होता है। ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर रहने वाले अस्थायी रूप से जगह खाली करते समय स्थानों के बचाव का अनुरोध किया जाता है। सोमर एवं बेकर (1969) बचाव की संभावना उस समय कम थी जब उपयोगकर्ता के रहने की पूर्व अवधि (5 मिनट बनाम 20 मिनट) थी तथा वहीं अधिक संभाव्यता (15 मिनट बनाम 60 मिनट) थी। हालांकि, जब पड़ोसियों से स्पष्ट रूप से क्षेत्र का बचाव करने का आग्रह किया गया तब 71 प्रतिशत ने दावा किए गये क्षेत्र पर अपने स्वयं के चिन्हक लगाकर क्षेत्र का बचाव किया (होये इत्यादि, 1972)।

5.8.1 क्षेत्रीय सीमांकन, वैयक्तीकरण और व्यवहार

क्षेत्रीयता चिन्हक के माध्यम से व्यक्त की जाती है और इसमें अक्सर निजीकरण शामिल होता है। कैसिडी (1997) के अनुसार बाड़े, सीमाएं एवं अन्य संकेतक दर्शाते हैं कि अमुक क्षेत्र किसी का है चिन्हकों द्वारा बिना पहचान किए गए क्षेत्रों का पता चल जाता है कि वे क्षेत्र किसी व्यक्ति या समूह का है। व्यक्ति की पहचान वाले चिन्हक जैसे नाम पट्टिका या जो क्षेत्र एक अलग ढंग से पृथक किया गया हो (जैसे घर का नाम, नम्बर) क्षेत्र को निजीकरण करने के प्रयास को प्रदर्शित करता है। सार्वजनिक क्षेत्र स्वयं सचेत रूप से स्थान आरक्षित करने के लिए चिन्हित है। कब्जा और संकट को रोकने के लिए लोग अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र (जैसे पुस्तकालय में स्थान या समुद्र तट पर स्थान) में क्षेत्रों को चिन्हित करते है। अधिकतर जब सार्वजनिक क्षेत्र के क्षेत्र पर आक्रमण किया जाता है, तब लोग अपने अधिभोग को अन्य स्थानों पर स्थानान्तरित कर देते हैं। हालांकि, आक्रमण कुछ शारीरिक उत्तेजना और क्रोध उत्पन्न करता है (कासिडी, 1997)। इसके विपरीत, इसकी संभावना अत्यल्प है कि प्राथमिक क्षेत्र (जैसे घर, उछान) पर आक्रमण होता हो।

सार्वजनिक क्षेत्र चिन्हकों की प्रभाविता कई कारकों पर निर्भर करती है जिसमें मालिक की अनुपस्थिति की अवधि वैकल्पिक स्थान की उपलब्धता एवं क्षेत्र की

वांछनीयता शामिल है (ब्राउन एवं ऑल्टमैन, 1983)। जब पर्याप्त स्थान हो तब क्षेत्रीयता चिन्हक प्रभावी होते हैं और कब्जा होने को रोका जा सकता है। हालांकि, जब जनसंख्या में वृद्धि के साथ वैकल्पिक स्थान कम हो जाता है, तब क्षेत्रीय चिन्हक अपना महत्व और प्रभावशीलता खो देते हैं (सोमर एवं बैकर, 1969)। इसी प्रकार एक चिन्हक (उदाहरण स्नैक बार मेज पर एक स्कूल का अखबार) की प्रभावशीलता कम हो जाती है, जब अगर गलती से किसी कब्जा घाटी द्वारा इसे कूड़े के रूप में मान लिया जाता है (एनेन्सन, 1977)। हालांकि कॉलेज कॉपियों जैसे चिन्हकों की अवहेलना नहीं की जाती है।

कुछ अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि एक बार में आधा गिलास बियर एक अधिक वैयक्तिक चिन्हक जैसे खेल, जैकेट की तुलना में मेज पर कब्जा करने के लिए एक प्रभावी उपाय है (होपे, ग्रीन एवं केनी, 1972)। एक समीक्षा में ब्राउन एवं आल्टमैन (1983) ने तर्क दिया कि संभावित ग्राहकों को एहसास होता है कि बार से बाहर निकलते वक्त संरक्षक अपनी जैकेट भूल सकते है परंतु शायद ही कभी आधे ग्लास खाली बियर को छोड़ते हैं क्योंकि संभावित ग्राहक मानते हैं कि बार मालिक संरक्षक के वापस आने की उम्मीद करता है। इस प्रकार, वैयक्तिक चिन्हक अवैयक्तिक चिन्हकों की तुलना में कब्जा करने से अधिक बचाव करते हैं।

5.8.2 क्षेत्रीयता, व्यवहार और आक्रामकता

कई स्थितिजन्य कारकों के आधार पर क्षेत्र या तो आक्रामकता के उत्तेजक के रूप में या आक्रामकता के अग्रसारण के रूप में कार्य कर सकता है। किसी विशेष क्षेत्र की स्थिति क्षेत्रीयता एवं आक्रामकता के मध्य संबंधों को प्रभावित करती हैं। जब क्षेत्र अस्थापित या विवादित होता है, तब आक्रमण की संभावना अधिक होती है। लेव एवं साइब्रस्की (1974) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि गली गिरोह अधिक अन्तर गिरोह हिंसा में लिप्त थे, जब वे क्षेत्रीय सीमाएं अस्पष्ट थी कि तुलना में अच्छी प्रकार से स्थापित थीं। इसके अतिरिक्त सबूत उपस्थित हैं कि अच्छी प्रकार से चिन्हित क्षेत्रीय सीमाएं स्थिरता प्रदान करती है और हिंसा एवं आक्रामकता की संभावना को कम करती है। अन्य अध्ययनों ने बताया कि पहचानने योग्य क्षेत्रों के आरम्भ के बाद मंदबुद्धि बालकों के समूह में आक्रामकता के स्तर में गिरावट देखी गई। इस प्रकार ऐसा लगता है कि अच्छे प्रकार से स्थापित क्षेत्रों में कब्जा होने की संभावना कम है और आक्रमण की भी संभावना कम है (ऐलो, 1987)।

8.5.3 वास्तुकला विशेषताएं एवं क्षेत्रीय व्यवहार

सार्वजनिक जगहों में कुछ वास्तुशिल्प विशेषताएं क्षेत्रीय दावों के विकास को प्रोत्साहित करती दिखायी देती हैं। सोमर (1967) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि छात्र पुस्तकालय सीटों के लिए क्षेत्रीय दावा करने की अधिक संभावना वहां रखते हैं जहां दीवार पास में हो, प्रवेश द्वार से दूर एवं कमरे के पीछे की तरफ हो। राहगीर पानी के फव्वारे का उपयोग करने की संभावना रखता है यदि इसे भौतिक अवरोध द्वारा दूसरों की स्थानिक निकटता से परिरक्षित किया जाता है (ऐलो, 1987)।

आमतौर पर देखा गया है कि अधिकतर आपराधिक गतिविधियां सार्वजनिक स्थानों के आसपास के क्षेत्रों में केन्द्रित होती हैं। अपराधियों के गली के कोनों, रास्तों में खुले स्थानों में तथा बगीचे जैसे स्थानों से बचने की कोशिश करने की संभावना अधिक होती है। रक्षात्मक स्थान की संकल्पना सार्वजनिक स्थान संगठन के विभिन्न पहलुओं पर केन्द्रित है जो इसके निवासियों में स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देने में सहायक होता है (न्यूमैन, 1972)। न्यूमैन (1972) ने न्यूयॉर्क में दो आवास परियोजनाओं पर एक अध्ययन किया, जिसमें निवासियों की संख्या समान थी। ब्राउन्सविले परियोजना छोटे भागों में आयोजित की गई थी जिसमें पांच से छः परिवारों के लिए आवासीय इकाइयां थीं और इसे आंगन के चारों ओर बनाया गया था। हौन डाइक परियोजना बड़े पार्कों द्वारा पृथक किए गए आवासीय ब्लॉकों की रचना सुविधाओं ने निवासियों को रक्षात्मक स्थान उपलब्ध कराया। रचना सुविधाओं ने ब्राउन्सविले आवास में पड़ोसियों के मध्य समुदाय एवं सामाजिक सम्पर्क की भावना को सुविधाजनक बनाया जिसने सुरक्षा को बढ़ावा दिया एवं आपराधिक दुर्घटनाओं को कम किया। इसके उलट, ब्राउन्सविले के सापेक्ष वैनडाइक आवास में अपराध दर 50 प्रतिशत अधिक थी क्योंकि आवासीय रचना द्वारा सामाजिक सम्पर्क की संभावना को बाधित किया गया था। इस तरह ऐसा लगता है कि क्षेत्रीय स्वामित्व और रक्षा की शक्ति परिस्थिति की विशेषताओं, वास्तुशिल्प रचना की विशेषताओं, लिंग, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और समूह के आकार के अनुसार भिन्न होती हैं।

5.9 वैयक्तिक स्थान

5.9.1 वैयक्तिक स्थान का संप्रत्यय

सामाजिक व्यवहार के सबसे उत्तम नियमों में से एक नियम है कभी भी अपने पड़ोसी के निजी स्थान में अतिक्रमण न करें। सीधे शब्दों में कहें तो हम सभी को बैठने, सोचने, अध्ययन करने, सोने या व्यायाम करने के लिए एक निजी स्थान की आवश्यकता होती है। एक विशेष स्थान अकेले रहने हेतु, अपने विचारों की गोपनीयता में कुछ समय व्यतीत करने हेतु। वैयक्तिक स्थान एक व्यक्ति के आस-पास का वह क्षेत्र है जिसे मनोवैज्ञानिक रूप से वे 'अपना स्थान' मानते हैं। अधिकतर लोग अपने वैयक्तिक स्थान को महत्व देते हैं और असहज महसूस करते हैं तथा क्रोध व चिंता भी करते हैं जब कोई अजनबी बातचीत करते समय आपके बहुत करीब आ जाता है तथा जब वैयक्तिक स्थान पर आक्रमण किया जाता है। वैयक्तिक स्थान इस प्रकार उस दूरी को संदर्भित करता है जब आप लोगों के मध्य बातचीत करते समय आवश्यक दूरी बनाने हेतु स्वचालित रूप से एक कदम पीछे हटना होता है। यह सुरक्षित एवं आरामदायक महसूस करने हेतु आवश्यक है। यह तत्काल क्षेत्र है जो हमें घेरता है तथा इसे हमारी मनोवैज्ञानिक संपत्ति के रूप में देखा जाता है। यदि लोग उस स्थान में घुसने का प्रयास करते है, तो व्यक्ति खुद को बंद, असहज एवं चिंतित महसूस करने लगता है।

1960 में एडवर्ड हॉल ने (सन्निधि विज्ञान) शब्द को उन विधियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया, जिसमें लोग सामाजिक संपर्क को विनियमित करने हेतु भौतिक स्थान का

उपयोग करते हैं। उनकी पुस्तक *'दि हिडन डाइमेंशन'* वैयक्तिक स्थान के क्षेत्र में मील का पत्थर है। काट्ज (1937) एवं सोमर (1969) इस क्षेत्र में कुछ अन्य मौलिक शोधकर्ता हैं। उनके अनुसार, वैयक्तिक स्थान अदृश्य भौतिक सीमा है जिसे हम अपने और अन्य लोगों की मध्य खींचते हैं। यह तय करता है कि हम उस व्यक्ति के कितने समीप जायेंगे या उसे अपने करीब आने देंगे। इसलिए, शायद उपयोग करने के लिए उत्तम शब्द 'पारस्परिक दूरी' हो सकता है क्योंकि यह तभी प्रासंगिक हो जाता है जब हम दूसरों के साथ वार्तालाप कर रहे होते हैं। इसके विषय में तभी मालूम हो जाता है जब कोई इस पर कब्जा करता है या हमला करता है।

वैयक्तिक स्थान अधिकतर, इस बात का सूचक होता है कि हम व्यक्ति, हमारे समाज एवं संस्कृतिक के साथ किस प्रकार के संबंध साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति के लिए किसी करीबी से स्नेहपूर्ण आलिंगन पूरी तरह सही होगा, परन्तु किसी अजनबी से गले मिलना न केवल असहज होगा बल्कि अधिकतर के लिए अपमानजनक भी होगा। इसलिए जिस प्रकार से शरीर के कार्य तथा आनन के भाव बहुत कुछ अशाब्दिक सूचना का संचार कर सकते हैं, उसी भांति व्यक्तियों के मध्य यह स्थान भी हो सकता है। एडवर्ड हॉल (1966) भौतिक ने वैयक्तिक स्थान के चार क्षेत्रों की पहचान की। फिर उन्होंने उसमें से प्रत्येक को दो उपश्रेणियों में विभाजित किया, 'निकट' एवं 'दूर'।

1) ***अन्तरंग दूरी:*** यह सबसे छोटा क्षेत्र है तथा लगभग 18 इंच की दूरी पर होता है जैसा कि नाम से पता चलता, यह स्थान केवल उनके लिए खुला होती है जो हमारे बहुत करीबी होते हैं। यह दूरी अक्सर बड़े आराम स्तर को दर्शाती है जिसे हम व्यक्ति के साथ साझा करते हैं। तब केवल हमारे जीवन साथी, बच्चे, करीबी, परिवार के सदस्य, मित्र एवं पालतू जानवर ही हमें परेशान किए बिना इस स्थान में प्रवेश पा सकते हैं। स्नेह एवं आराम के प्रदर्शन अधिकतर स्थान के अन्दर आयोजित किए जाते हैं। इस अन्तरंग स्थान के अन्दर एक व्यक्ति आमतौर पर सीमांत किए जाने वाले एकमात्र अस्थायी, अजनबी स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर या कुश्ती मैच खेलने जैसी स्थितियों में होते हैं। हॉल ''निकट'' स्थितियों का वर्णन करता है जैसे जब हम शरीर से संपर्क करते हैं, उदाहरण के लिए, आलिंगन और ''दूर'' जब हम करीब होते हैं लेकिन वास्तव में स्पर्श नहीं करते हैं जैसे कि जब हम फुसफुसाते है। यदि, कोई अजनबी इस आरक्षित स्थान में घुसने की कोशिश करता है, तब हम बहुत ही असहज महसूस करते हैं।

2) ***वैयक्तिक दूरी:*** यह शारीरिक दूरी भी करीबी मित्रों एवं परिवार के सदस्यों के लिए है। हम व्यक्ति के जितना करीब होते हैं, यह दर्शाता है कि हम भावनात्मक रूप से उसके कितने पास ही यह एक हाथ की लम्बाई के बराबर हो सकता है। यह 18 इंच से 4 फीट तक फैला होता है। यह स्थान मित्रों के साथ वार्तालाप, सहयोगियों के साथ गप करने तथा समूह चर्चा करने के लिए

अधिकतर उपयोग होता है। इस तरह के अनौपचारिक वार्तालाप एवं मित्रों, परिचितों के साथ वार्ताएं इस स्थान पर संचालित किया जाता है। इस क्षेत्र में भी अजनबियों का प्रवेश वर्जित होता है। यह निकट जोड़ों या करीबी मित्रों के लिए तथा 'दूर' एक सामाजिक परिस्थिति में परिचितों के लिए है।

3) ***सामाजिक दूरी:*** यह दूरी 4 फीट से 12 फीट तक होती है और आमतौर पर ज्ञात लोगों, नए परिचितों या यहां तक कि अजनबियों के साथ औपचारिक सामाजिक वार्तालाप के लिए उपयोग की जाती है। दूरी की सीमा स्थिति के अनुसार बदलती है। उदाहरण के लिए, अपने सहपाठी के साथ एक अनौपचारिक व्यवसायिक बैठक में आप किसी ऐसे ग्राहक के साथ औपचारिक व्यावसायिक बैठक की तुलना में शारीरिक रूप से अधिक करीब हो सकते हैं, जिससे आप पहली बार मिल रहे हैं।

4) ***सार्वजनिक दूरी:*** सामाजिक स्थान से परे का स्थान सभी के लिए खुला होता है और इसे सार्वजनिक स्थान के रूप में जाना जाता है। यह स्थान जो 12 फीट से अधिक फैला होता है, अनिवार्य रूप से भाषणों, व्याख्यानों, प्रस्तुतियों प्रर्दशनों आदि के हेतु सार्वजनिक बोलने की स्थितियों के लिए उपयोग किया जाता है। इस दूरी का 'दूर' चर उस समय देखा जा सकता है जब एक विख्यात नेता का संबोधन हो रहा हो। उसके एवं दर्शकों के मध्य दूरी अधिक हो जाती है। कभी-कभी, ऐसी श्रेणियों की आलोचना बहुत कठोर होने के रूप में की जाती है, लेकिन वे उन प्रकारों की व्याख्या करती है जिनसे वे व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इस शब्द का प्रयोग आम आदमी के वार्तालाप में शाब्दिक या प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, यदि हम, किसी के साथ अच्छे संबंध साझा करते हैं, तो हम 'करीबी' होने की बात करते हैं, जब हम साथ नहीं होते हैं तब कहते हैं, चलो दूरी बनाए रखें। समीप रहना या दूर रहना वास्तव में 'वैयक्तिक स्थान' के बारे में बात कर रहा है।

संकल्पना की व्याख्या करने के भी दो सिद्धांत हैं। अरजाइल एवं डीन (1965) ने संबद्धता संघर्ष सिद्धांत द्वारा वैयक्तिक स्थान की संकल्पना की व्याख्या करने की कोशिश की। यह शास्त्रीय दृष्टिकोण परिहार संघर्ष की भांति जिसका हम सामना करते हैं। हम दूसरों के साथ रहना चाहते हैं साथ ही कुछ दूरी भी बनाए रखना चाहते हैं। वैयक्तिक स्थान का विचार हमें समझौता करने में सहायता करता है, ताकि संतुल्य बना रहे। इसे सामाजिक संरचनावादी दृष्टिकोण से थोड़े अलग प्रकार से समझा जा सकता है। इसके अनुसार वैयक्तिक स्थान पर कब्जा, शारीरिक उत्तेजना उत्पन्न करता है तथा इससे स्थिति का संज्ञानात्मक मूल्यांकन भी होता है। मूल्यांकन के आधार पर हमारे करीबी, शारीरिक निकटता या स्नेह में बदल सकते हैं लेकिन, यदि वह अपरिचित है, तो हम बहुत क्रोधित हो सकते हैं। इस प्रकार वैयक्तिक स्थान पर कब्जा के कारण होने वाला तनाव संदर्भ और हमारे मूल्यांकन पर निर्भर है।

5.9.2 गोपनीयता

गोपनीयता, वैयक्तिक स्थान और क्षेत्रीय व्यवहार लोगों की पर्यावरणीय सुविधा एवं गुणवत्ता की धारणा को प्रभावित करते हैं। गोपनीयता, वैयक्तिक स्थान और क्षेत्र की आवश्यकता सर्वव्यापी है। ये तीनों संकल्पनाएं (गोपनीयता, क्षेत्रीय व्यवहार और वैयक्तिक स्थान) निकट से संबंधित है। गोपनीयता का अर्थ सूचना के प्रबंधन या किसी के साथ सामाजिक संपर्क के नियमन से है (लॉफर, इत्यादि, 1973 एवं सेन्डस्ट्रॉम, 1986)। यह अवांछित अवलोकन, प्रदर्शन, व्याकुलता या रूकावट से जानबूझकर पीछे हटना है। गोपनीयता को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं। यथा –

- **इंद्रियों की क्रियाविधि** – सभी 5 ज्ञानेन्द्रियां जिस तरह से मनुष्य अपने परिवेश एवं क्रियाविधि को प्रत्यक्षित करता है को प्रभावित करती है जिसके द्वारा वे गोपनीयता को नियंत्रित करते है।

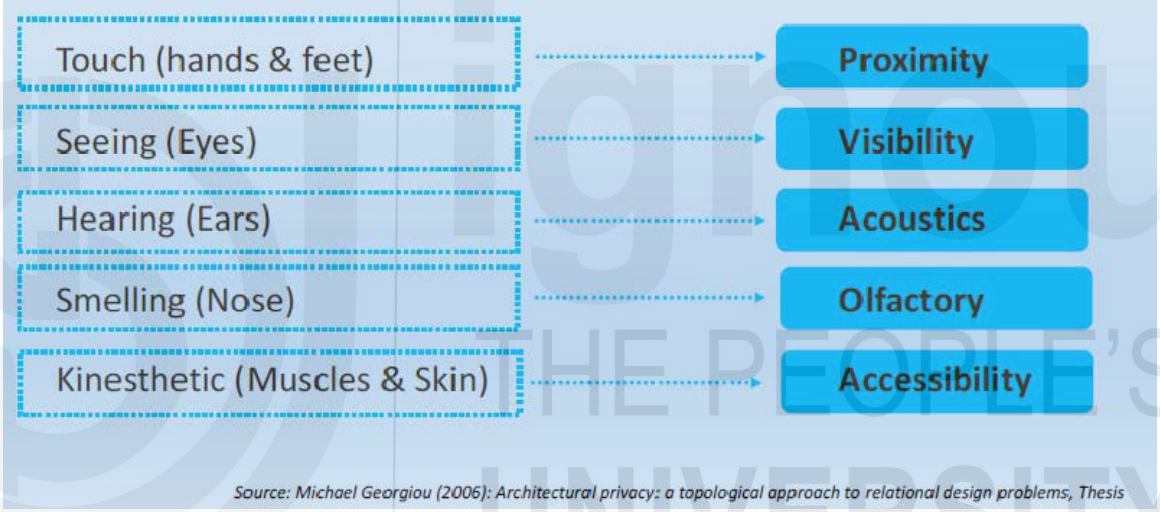

चित्र 5.1 गोपनीयता में इन्द्रियों की क्रियाविधि

- ***वैयक्तिकता*** – वैयक्तिकता की भावना, आत्म-मूल्यांकन और पहचान (वैयक्तिक मूल्य, विश्वास, राय और अभिव्यक्ति), चयनात्मक और पारस्परिक संचार (विभिन्न संदर्भों में) और वार्तालाप का स्तर।

- ***स्थान दूरी*** – दूरियों का एक बंडल (समीपस्थ पैटर्न) जिसका उपयोग लोग दूसरों के साथ अपने संबंधों को नियमित करने के लिए करते है। ये दूरियां अलग-अलग समाजों में और एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में बदलती है।

- ***किसी स्थान के वास्तुकला तत्व*** – वास्तुकला तत्व गोपनीयता के नियामक के रूप में कार्य करते है, दृश्यिक ध्वनिक और स्थानिक रूप से। ये तत्व हैं:
  - फर्नीचर
  - दीवारें
  - बाड़े (घेरा)

- दरवाजे
- सजावट
- रंगीन शीशा
- खिड़कियां

- ***संस्कृति*** – संस्कृति उस सीमा को प्रभावित करती है जिसे निजी माना जाता है। गोपनीयता का स्तर एवं उपाधि विश्व के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होती है। गोपनीयता को दूसरों के साथ नियंत्रण वार्तालाप के तंत्र के रूप में समझाया गया है। संस्कृति के कारण उत्तर अमेरिकी लोग अरबी पुरुषों की तुलना में वार्तालाप के समय एक दूसरे के बीच अधिक स्थान रखते हैं।

गोपनीयता कई प्रकार की होती है, जिनमें से प्रत्येक से भिन्न उद्देश्य की पूर्ति होती है। बेस्टिन (1970) ने चार प्रकारों की पहचान की हैं:

- **एकांत** – इस प्रकार की गोपनीयता में व्यक्ति अकेला रहता है और दूसरों के अवलोकन से मुक्त होता है इस प्रकार वह गोपनीयता की सबसे चरम स्थिति में होता है।

- **घनिष्ठता** – दूसरी गोपनीयता स्थिति तब उत्पन्न होती है जब छोटा समूह जैसे जोड़े के दो लोग, अकेले रहने हेतु बाहरी लोगों से खुद को पृथक कर लेते हैं।

- **अनामिता** – इस प्रकार की गोपनीयता तब उत्पन्न होती है जब कोई व्यक्ति भीड़-भाड़ वाले, सार्वजनिक स्थान पर, दूसरों द्वारा पहचाने बिना स्वतंत्र रूप से कार्य करता है।

- **आरभिति** – इसमें, जब कोई व्यक्ति चल रही गतिविधि में लगे रहने के समय अवांछित घुसपैठ के खिलाफ मनोवैज्ञानिक बाधा उत्पन्न करता है। यह निजता की स्थिति है जिसमें हम मनोवैज्ञानिक रूप से कुछ अन्य व्यक्तियों से पृथक हो जाते हैं।

5.9.3 वैयक्तिक स्थान के निर्धारक

हम पारस्परिक दूरी की भावना को कैसे उत्पन्न करते है। क्या कोई शारीरिक कारक भी है या केवल यह एक मनोसामाजिक घटना है? कौन से वो कारक हैं जो हमारे वैयक्तिक स्थान को निर्धारित करते है? आइए जानने का प्रयास करते हैं –

क) शारीरिक कारक – एडॉल्फस इत्यादि (2009) के अनुसार व्यक्ति 3 से 4 वर्ष की आयु में वैयक्तिक स्थान की अपनी समझ हासिल करना शुरू कर देते हैं और यह किशोरावस्था से पूर्णतः विकसित हो जाता है। जनरल/नेचर, 2009

में उसने उल्लेख किया है कि इस अजीबोगरीब भावना का निर्माण और देखभाल एमिगडाला द्वारा की जाती है, जो डर का अनुभव करने में शामिल मस्तिष्क क्षेत्र है जब हमारे क्षेत्र पर आक्रमण किया जाता है, तब यह प्रतिकारक बल उत्पन्न करता है। यदि कोई बहुत पास आता है तो यह चेतावनी देता है, इस प्रकार यह हमें दूसरों से न्यूनतम दूरी बनाये रखने में सहायक होता है। यदि मस्तिष्क का यह भाग क्षतिग्रस्त हो जाता है, तो मस्तिष्क में क्षेत्र में आक्रमण दर्ज नहीं होता है। इसकी पुष्टि एक रोगी ने की थी जिसका एमिगडाला क्षतिग्रस्त था। उसे वैयक्तिक स्थान को कोई समझ नहीं थी तथा अपरिचितों के करीब होने पर भी वह सहज भाव रखती थी बन्दरों पर भी प्रयोग करके समान परिणाम पाये गए (एमराल आदि, 2003)। उन्होंने कहा कि स्वलीनता (ऑटिज्म) से ग्रसित व्यक्तियों को अक्सर सामान्य व्यवहार को बनाए रखना कठिन होता है और वे बिना किसी भावनात्मक समस्या के करीब रह सकते हैं (अमराल आदि, 2003)।

ख) **सांस्कृतिक कारक** – सभी संस्कृतियां संवाद करने हेतु वैयक्तिक स्थान का उपयोग करती है परन्तु हॉल (1959) ने इस तथ्य पर बल दिया कि हमारे आराम क्षेत्र के बचाव हेतु आवश्यक वैयक्तिक स्थान का आकार विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न होता है। वह कुछ संस्कृतियों का 'संस्कृतियों से संपर्क' कहते है। उदाहरण के लिए मध्य पूर्वी या लैटिन देश आमतौर पर शारीरिक अन्तरंगता का प्रदर्शन करते हैं। एक दूसरे के निकट खड़े होते हैं, और इस प्रकार उन्हें कम वैयक्तिक स्थान की जरूरत होती है। यदि हम गैर संपर्क संस्कृति से संबंध रखते हैं तो हम संवाद करते समय हम न तो, दूसरों को छूते है और न ही उनके निकट खड़े होते हैं। हम पृथक खड़े रहना पसंद करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को स्वाभाविक रूप से अपने और अन्य के मध्य अधिक वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता होती है। उत्तरी अमेरिका, यूरोप के लोगों की गैर-संपर्क संस्कृतियों से संबंधित व्यक्तियों के रूप में देखा जा सकता है। हॉल ने इस अन्तरों को संवेदी और तौर-तरीकों के संबंध में सांस्कृतिक मानदंडों के हेतु जिम्मेदार ठहराया, जिसे लोगों के मध्य संचार के लिए उत्तम माना जाता है। अनौपचारिक वार्तालाप, व्यापार, अभिवादन आदि के लिए विशिष्ट मानदंड है। यदि हम अपने वैयक्तिक स्थान के माध्यम से सही संकेत भेजना चाहते हैं तो उन्हें जानना महत्वपूर्ण है। यदि हम इन मानदंडों का पालन नहीं करते हैं तब हम कठिनाई में हो सकते हैं या अन्य व्यक्ति को संस्कृति के उल्लंघन का झटका दे सकते हैं। उदाहरण के लिए सामाजिक चुंबन जैसे स्नेह का सार्वजनिक प्रदर्शन पश्चिमी यूरोपीय देशों में अभिवादन का सामान्य संकेत है। हालांकि, यह शायद कई पूर्वी संस्कृतियों का हिस्सा नहीं है। इस तरह विभिन्न संस्कृतियों में 'सही दूरी' की अलग-अलग संकल्पनाएं हो जैसा कि उदाहरण द्वारा बताया गया है, हमें अप्रिय सामाजिक दुर्घटनाओं से बचने हेतु उस सीमा रेखा के बारे में मालूम होना चाहिए।

ग) **स्थान का जनसंख्या घनत्व** – वैयक्तिक स्थान एक अत्यधिक परिवर्तनशील अवधारणा है। जैसे हमारी संस्कृति इसे प्रभावित करती है, वैसे ही हमारे

अनुभव इसे आकार देते हैं। यदि हम मुंबई या जापान जैसे हावी आबादी वाले क्षेत्रों में रहते हैं, तो अधिक संभावना है कि हमारे पास एक बड़ा वैयक्तिक स्थान न हो। बढ़ती जनसंख्या ने अपने नागरिकों को विलासिता पूर्ण जिन्दगी कभी नहीं दी है और न ही दे सकती है, इसलिए उन्होंने अपने आसपास कम वैयक्तिक स्थान रखने हेतु अनुकूलित किया है। मंगोलिक एवं कनाडा के लोग, जहाँ बहुत अधिक स्थान मौजूद है अपने चारों और बड़ा स्थान रखने के आदि होते है, इसलिए उन्हें सुरक्षित महसूस करने के लिए उसी की जरूरत होने लगती है। मुंबई की भीड़-भाड़ वाली रेलगाड़ी में वे खुद को बहुत असहज महसूस करेंगे, जबकि मुंबई का एक नागरिक किताब पढ़ना जारी रख सकता है।

घ) **वैयक्तिक कारक** – उम्र, जेंडर, सामाजिक स्थिति, चिंता, असमान्यता, यहां तक कि एक संस्कृति या देश के भीतर, वैयक्तिक स्थान की मात्रा में भिन्नता होगी जिसे हमें सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता हैं। इसमें भूमिका निभाने वाले कुछ कारक हैं:

i) **जेंडर** – यह पाया गया है कि दो पुरुषों को दो महिलाओं की तुलना में उनके मध्य अधिक पारस्परिक दूरी की आवश्यकता होती है। गिफर्ड (1982) शामिल करते है कि यद्यपि महिलाएँ अधिक वैयक्तिक स्थान पसंद करती है, यह स्थिति, संबंध आदि पर भी निर्भर करती हैं।

ii) **आयु** – जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, स्थान की हमारी आवश्यकता बढ़ती जाती है। हेडुक 1983, बताते है कि बच्चों के मामले में हमें नजदीकियों से कोई फर्क नहीं पड़ता है। चूंकि लैंगिकता की संकल्पना उनके लिए अज्ञात है, इसलिए कोई खतरा नहीं माना जाता है। लेकिन जैसे-जैसे हम परिपक्वता की तरफ बढ़ते हैं हम अपनी लिंग भूमिकाओं की व्याख्या करते हैं तथा बड़े वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता विकसित होती है।

iii) **स्थिति** – वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता भी हमारे समाज में हमारी स्थिति से निर्धारित होती है। हम जितने समृद्ध और आर्थिक रूप से मजबूत हैं, हमें वैयक्तिक स्थान की उतनी ही आवश्यकता होती है। शक्तिशाली, अमीर लोग अधिक गोपनीयता और अनन्य स्थान चाहते हैं। एक व्यक्ति, जिसे चालक जलित कार में यात्रा करने की आदत है, भीड़-भाड़ वाले सार्वजनिक परिवहन में कठिनाई होगी।

iv) **साझा संबंध** – जैसा कि पहले देखा गया है, हमारी भावनाएं हमारे द्वारा साझा की जाने वाली पारस्परिक दूरी पर हावी होती है। हम अंतरंग तथा किसी के निकट तभी हो सकते हैं जब इस भावनात्मक रूप से बंधे हो। जितना अधिक हम किसी व्यक्ति को नापसंद करते है, उतनी ही अधिक पारस्परिक दूरी होगी।

v) **व्यक्तित्व** – हमारे वैयक्तिक लक्षण भी हमारे इर्द-गिर्द की जगह की मात्रा को प्रभावित करते है गिफर्ड (1982) ने पाया कि बर्हिमुखी एवं मिलने जुलने वाले व्यक्तियों को विनम्र एवं झगड़ालू व्यक्तियों की अपेक्षा कम वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता होती है। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन ने एक शोध में पाया कि चिंतित व्यक्तियों को अधिक पारस्परिक स्थान की जरूरत होती है क्योंकि उन्हें जल्द ही खतरा महसूस होने लगता है। शर्मिले, स्वलीनता और बन्द स्थान से डरने वाले लोगों को भी अधिक स्थान की जरूरत होती है। सोये (1959) ने बताया कि स्किजोफ्रेनिआ से ग्रसित लोग भी विशिष्ट एवं परिवर्तनशील वैयक्तिक स्थान दिखाते है। जब वे वापसी चरण में होते हैं तब वे अधिक दूरी चाहते हैं, लेकिन जब वे ध्यानाकंर्षित करने वाले चरण में होते हैं, तब वे निकटता चाहते हैं। दूरी एवं समस्या व्यवहार पर शोध से यह पाया गया है कि हिसंक अपराधी भी बड़ी पारस्परिक दूरी रखना पसंद करते है।

ङ) **परिस्थितिजन्य या स्थितिजन्य कारक** – वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता स्थिति के अनुसार एक ही व्यक्ति में भिन्न हो सकती है। जैसा कि हमने इकाई में पढ़ा है, कि भीड़-भाड़ में बहुत से लोग किराए या किसी विशेष फिल्म के प्रीमीयर में इधर-उधर दोड़ते हैं। थिएटर में सीट के दोनों और बैठे यात्रियों को बिना बड़बड़ाहट के स्वीकार किया जा सकता है। परन्तु अगर यह मुश्किल से भरा जाता है, तो कई सीटें खाली होती हैं और फिर भी दो लोग दूर की सीट पर बात कर रहे होते हैं तब भी गोपनीयता पर हमला हो सकता है। शोध से यह भी मालूम हुआ है कि हम अपने सामने या पीछे के बजाए उन सीटों पर कब्जा करने में अधिक सहज होंगे, अगर लोग हमारे तरफ हैं तो आगे या पीछे आने पर हम अचानक नाराज महसूस करते हैं। इसलिए वैयक्तिक स्थान बुलबुला अण्डाकार और स्थितिजन्य मालूम पड़ता है। टेडेस्को एवं फ्राम (1974) ने पाया कि यदि लोगों के पास कम पारस्परिक स्थान होता है, यदि वे प्रतिस्पर्धा ने भाग लेते हैं, तो इस कार्य में भाग लेते हैं जिसमें सहयोग की जरूरत होती है और उन्हें बहुत आवश्यक होती है।

च) **अपेक्षाएं एवं सामाजिक धारणा** – वैयक्तिक स्थान भी इस बात से तय होता है कि हम जिस व्यक्ति से मिलने जा रहे हैं, उसके बारे में हमारी क्या अपेक्षाएं हैं। उस व्यक्ति के बारे में सामाजिक धारणा हमारी पारस्परिक दूरी को भी प्रभावित करेगी। यदि हमारा दृष्टिकोण नकारात्मक है, तो हम दूर रहना पसंद करते हैं और अधिक वैयक्तिक स्थान की आवश्यकता होती है। स्कोरजेन्स (1991) ने अपराधियों के कथित हिस्सा स्तर के संबंध में प्रतिभागियों के वैयक्तिक स्थान जाँच की जिनसे वे मिलने वाले ले। बताया गया है उनसे से एक हिंसक अपराधी है एवं इसका अहिंसक अपराधी है और तीसरे ने कभी किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया है। परिणामों ने संकेत दिया कि प्रतिभागियों ने हिंसक अपराधी के साथ अधिकतम और गैर–अपराधी के साथ न्यूनतम स्थान रखा। क्लेक (1969) एवं वैरन (1978) ने भी इस शोध परिणाम का समर्थन किया। इस तरह यह स्पष्ट है कि पारस्परिक दूरी दूसरों के साथ हमारी बातचीत को विनियमित करने में भूमिका निभाती है और यह

साझा संबंधों का एक बहुत उत्तम संकेतक है। यह वैयक्तिक स्थान को व्यावसायिक अध्ययन का एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू बनाता है क्योंकि अन्तःक्रिया जीवन में हमारे सभी सामाजिक अन्तःक्रियाओं का आधार है। चाहे वह हमारा खेल हो, आराम हो हम अधिक सफलता प्राप्त करेंगे यदि हम पारस्परिक दूरी के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं से अवगत है।

5.9.4 वैयक्तिक स्थान अध्ययन की विधियां

वैयक्तिक स्थान का अध्ययन करने की चार बुनियादी शोध विधियां हैं (ऐलो; 1987)।

1) **सतत अनुकरण विधियां** – इसमें व्यक्ति को एक काल्पनिक स्थिति में रखा जाता है कि वह कल्पना करे कि वह इसमें दूसरों के साथ किस प्रकार की बातचीत करेगा। कभी-कभी मॉडल या लघु प्रतीकात्मक आकृतियों का उपयोग उनके विचार को प्रदर्शित करने हेतु किया जाता है। आज कल कम्प्यूटर ग्राफिक्स का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह बालकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है लेकिन कृत्रिय प्रयोगशाला की स्थापना वास्तविक जीवन में व्यापक सामान्यीकरण की अनुमति नहीं देती है।

2) **अर्द्ध परियोजना या प्रयोगशाला विधियां** – इस विधि में, प्रयोग नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है तथा व्यक्ति खुद के शरीर का उपयोग अन्य व्यक्ति के संबंध में करता है। दूसरा व्यक्ति वास्तविक या काल्पनिक हो सकता है। उदाहरण के लिए स्टॉप– दूरी विधि व्यक्ति किसी व्यक्ति से तब तक सम्पर्क कर सकता है जब तक कि वह असहज महसूस न करने लगे। इसके अन्तर्गत एक अन्य विधि अन्तःक्रिया विधि हो सकती है जहाँ प्रयोगशालाओं में वास्तविक अन्तःक्रियाओं का प्रत्यक्ष विनीत अवलोकन किया जाता है। यद्यपि प्रयोगशाला पद्धति भ्रम से बचने हेतु प्रासंगिक चर को नियंत्रित करने की कोशिश करती है प्राकृतिक वातावरण में प्रयोगशाला परिणामों का सामान्यीकरण कठिन होता है।

3) **प्राकृतिक या क्षेत्र विधियां** – इस विधि में व्यक्तियों के मध्य दूरियों को प्राकृतिक परिस्थितियों में मापा जाता है। इस विधि को पारस्थितिक वैधता है जैसा कि प्राकृतिक वातावरण में किया जाता है। परन्तु इसमें कुछ अन्तर्निहित कमियां है जैसे हम नहीं जानते कि दोनों किस प्रकार के रिश्ते को साझा करते हैं, अन्य प्रासंगिक चर हस्तक्षेप कर सकते है, इसके अतिरिक्त किसी की गोपनीयता से हस्तक्षेप करने में नैतिक मुद्दे भी सम्मिलित हैं।

4) **प्रश्नावली विधि** – इस विधि में व्यक्तियों को एक स्थिति की कल्पना करनी होती है और मूल्यांकन करना होता है कि क्या वे उस स्थिति में असहज महसूस करते है। एक उदाहरण कम्फटेबिल इन्टर पर्सनल डिस्टेंस स्केल (सीआईडीएस) (डयूक एवं नौउची, 1972), जिस पर प्रतिभागियों को उस स्थिति का मूल्यांकन करना होता है, जिसमें वे असहज महसूस करते हैं जिसकी वे कल्पना कर रहे है। लेकिन संभावना है कि कोई व्यक्ति स्थिति को

न ही समझ सकता है या वह झूठ बोल सकता है। इस भांति, वैयक्तिक स्थान को मापने के विभिन्न प्रकार हैं और प्रत्येक का अपना सकारात्मक एवं संकेत होता है। चूंकि विषय बहुत ही वैयक्तिक नकारात्मक और संवेदनशील है इसलिए माप का कोई एक आदर्श तरीका नहीं है। लेकिन वे हमें यह समझने में सहायक होते हैं कि वैयक्तिक स्थान क्या हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

1) वैयक्तिक स्थान के चारों क्षेत्रों को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

2) वैयक्तिक स्थान का अध्ययन करने की एक विधि के रूप में सतत् अनुकरण विधि की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

3) वैयक्तिक स्थान में सांस्कृतिक कारकों की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

5.10 सारांश

इस इकाई के अन्तर्गत हमने जो कुछ भी सीखा है, उसे संक्षेप में बताने के लिए यहाँ त्वरित संक्षिप्तीकरण प्रस्तुत है –

- मनुष्यों में क्षेत्रीयता भौतिक स्थान, वस्तुओं तथा विचारों के नियंत्रण (आमतौर पर अहिंसक साधनों जैसे व्यवसाय, कानून, प्रथा तथा वैयक्तिकरण) से संबंधित व्यवहार और अनुभव का एक प्रतिरूप है।

- क्षेत्र प्रयोग और क्षेत्र अध्ययन व्यवहार का अध्ययन करने हेतु उत्तम साधन है, परन्तु क्षेत्र की अनुभूति का सबसे अच्छा अध्ययन साक्षात्कार एवं प्रश्नावली द्वारा किया जाता है।

- स्वामित्व, सकारात्मक सामाजिक वातावरण संसाधन प्रतिस्पर्धा, सामाजिक वर्ग और कार्य ऐसे सामाजिक कारक है जो क्षेत्रीयता को बढ़ाते प्रतीत होते है।

- वैयक्तीकरण, चिन्हन तथा प्रतिष्ठा का शारीरिक आक्रामकता की अपेक्षा अधिकतर अधिक उपयोग किया जाता है। क्षेत्रीयता के सिद्धांत इसके आयोजक क्रिया, व्यवहार व्यवस्थापन सिद्धांत और उद्विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

- रचनाकारों को घरों, कार्यालयों, और संस्थानों के उत्तम निर्माण हेतु क्षेत्रीयता का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। समग्र लक्ष्य व्यक्तियों को ऐसे क्षेत्र प्रदान करना है जो उन्हें उतना ही नियंत्रण प्रदान करते हैं जितना वे जिम्मेदारी के साथ निभाने में सक्षम हैं और जैसा कि संगठनात्मक संदर्भ अनुमति देता है। क्षेत्र धारकों को आत्मनिर्णय, अस्मिता और शायद बचाव की अधिक भावना से लाभ होगा।

- वैयक्तिक स्थान एक व्यक्ति के आस-पास का क्षेत्र है जिसे मनोवैज्ञानिक रूप से अपना मानता है। यदि कोई शारीरिक रूप से अधिक नजदीक आता है तो उसे असहजता का अनुभव होता है। 1960 में, एडवर्ड हॉल ने 'प्रॉक्सिमिक्स' शब्द को उन तरीकों के संदर्भ में प्रस्तुत किया जिनमें व्यक्ति सामाजिक अन्तःक्रियाओं को विनियमित करने हेतु भौतिक स्थान का उपयोग करते है।

- वैयक्तिक स्थान के निर्धारकों में शारीरिक कारक, सांस्कृतिक कारक, जनसंख्या घनत्व तथा वैयक्तिक कारक जैसे– लिंग, आयु, प्रस्थिति, पसंद और व्यक्तित्व एवं स्थितिजन्य कारक शामिल हैं।

- गोपनीयता का तात्पर्य सूचना प्रबंधन या किसी के इर्द-गिर्द के सामाजिक सम्पर्क के विनियमन से है। वैयक्तिक स्थान का अध्ययन करने की मुख्य विधियां सतत् अनुकरण विधि, प्रयोगशाला विधि, प्राकृतिक या क्षेत्र विधियां एवं प्रश्नावली विधि हैं।

5.11 मुख्य शब्द

क्षेत्रीयता – इसका तात्पर्य क्षेत्रीय स्थिति से है अर्थात किसी विशेष क्षेत्र के लिए एक स्थायी लगाव। यह किसी क्षेत्र के बचाव से जुड़े व्यवहार के प्रतिमान को भी संदर्भित करता है।

समुदाय रचना – यह एक एकात्मक औद्योगिक या आवासीय समुदाय रचना है जो एक विशेष समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें पंजीकृत एवं अपंजीकृत दोनों रूप हैं।

वैयक्तिक स्थान – एक शारीरिक प्रतिरोधी क्षेत्र, जिसे व्यक्ति अपने एवं दूसरों के मध्य बनाये रखते हैं।

गोपनीयता – यह एक पारस्परिक सीमा प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति दूसरों के साथ वार्तालाप को नियंत्रित करते है।

5.12 समीक्षा प्रश्न

1) क्षेत्रीयता क्या है? इसे प्रभावित करने वाले कारक क्या है?

2) विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों का वर्णन करें।

3) क्षेत्रीयता के मापन की विवेचना करें। क्षेत्रीयता को मापने के लिए कौन-कौन सी विधियां हैं?

4) क्षेत्रीयता के तीन प्रमुखों सिद्धांतों को प्रस्तुत करें।

5) पड़ोस या अस्पताल बनाते समय हम किन महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखते हैं?

6) वैयक्तिक स्थान की अवधारणा का विस्तृत वर्णन करें।

7) क्या आपके विचार में क्षेत्रीयता आक्रामकता से संबंधित है?

8) वैयक्तिक स्थान एवं क्षेत्र में क्या अन्तर है?

9) वैयक्तिक स्थान के विभिन्न निर्धारकों की विवेचना कीजिए।

10) वैयक्तिक कारक वैयक्तिक स्थान से कैसे संबंधित है?

5.13 संदर्भ एवं अन्य पाठ्य सामग्री

Bonnes, M., & Secchiaroli, G. (1995). *Environmental Psychology: A Psycho-social Introduction*. Sage.

Brown, B. B. (1987): Territoriality, In D. Stokols & I. Altman (Eds.), Handbook of environmental psychology. New York: Wiley.

Gifford, R. (1997): Environmental Psychology Principle and Practice, Allyn and Bacon; MA 02194.

Malhotra, N. K. (2007). *Environmental Psychology: Principles and Practices*. Sumit Enterprises

Nagar, D. (2006). *Environmental Psychology*. Concept Publishing Company.

Moser, G. and Uzzell, DL (2003). 'Environmental Psychology', in Millon, T., & Lerner, M.J.(Eds.), Comprehensive Handbook of Psychology, Volume 5: Personality and Social Psychology, New York: John Wiley & Sons. pp 419 – 445.

Steg, L. E., Van Den Berg, A. E., & De Groot, J. I. (2013). *Environmental Psychology: An Introduction*. BPS Blackwell.

Taylor, R. B. (1988): Human territorial functioning: An empirical, evolutionary perspective on individual and small group territorial cognitions, behaviours, and consequences, New York Cambridge University Press.

Tewari, R. & Mathur, A. (2014). *Environmental Psychology*. Pointer Publishers

Berger, E., Israel, G., Miller, C., Parkinson, B., Reeves, A., & Williams, N. (2016). World History: Cultures, States, and Societies to 1500.

Taylor, R. B., Gottfredson, S. D., & Brower, S. (1981). Territorial cognitions and social climate in urban neighborhoods. Basic and Applied Social Psychology, 2(4), 289-303.

Sommer, R. (1987). Crime and vandalism in university residence halls: A confirmation of defensible space theory. Journal of Environmental Psychology, 7(1), 1-12.

Ruback, R. B., Pape, K. D., & Doriot, P. (1989). Waiting for a phone: Intrusion on callers leads to territorial defense. Social Psychology Quarterly, 232-241.

5.14 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

SKYLINE | Prevention through Design (substack.com)
https://www.jstor.org/stable/2786718
accounts.pdf (jthomasniu.org)

Trade and reciprocity among the River Bushmen of northern Botswana on eHRAF World Cultures (yale.edu)

Newman, Oscar: Defensible Space Theory (udayton.edu)

http://djjr-courses.wdfiles.com/local--files/soc153:space-and-everyday-life/Notes%20on%20Sociology%20and%20Space.pdf